VISIONIAS

www.visionias.in

PT 365

Classroom Study Material

संस्कृति

JULY 2015 – APRIL 2016

NOTE: May 2016 and June 2016 current affairs for PT 365 will be updated on our website on second week of July 2016.

Copyright © by Vision IAS

All rights are reserved. No part of this document may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior permission of Vision IAS.

VISION

विषय सूची

A. व्यक्तित्व एवं लोग ____ 6

A.1. रुक्मणी देवी अरूंडेल ____ 6

A.2. सहज धारी सिख ____ 6

A.3. पंचतीर्थ : डॉ. बी. आर. अम्बेडकर ____ 6

B. कला शैली ____ 7

B.1. कलामंडलम सत्यभामा ____ 7

B.2. गोतिपुआ नृत्य (ओडिशा) ____ 7

B.3. पुरुलिया छऊ (पश्चिम बंगाल) ____ 8

B.4. सिक्किम के मठों में किया जाने वाला छाम नृत्य ____ 8

B.5. बधाई नृत्य (बुंदेलखंड) ____ 8

B.6. पंथी नृत्य (छत्तीसगढ़) ____ 9

B.7. डोल्लू कुनिथा नृत्य (कर्नाटक) ____ 9

B.8. पुंगचोलम (मणिपुर) ____ 9

B.9. सिंघी छाम (सिक्किम का स्नो लायन डांस) ____ 10

B.10. चेराव (मिजोरम का बांस नृत्य) ____ 10

B.11. थपेट्टा गुल्लू (आंध्र प्रदेश) ____ 10

B.12. रऊफ (जम्मू-कश्मीर) ____ 11

B.13. मयूर नृत्य (यूपी) ____ 11

B.14. राथवा आदिवासी नृत्य (गुजरात) ____ 11

B.15. जागोर लोक नृत्य ____ 12

C संगीत ____ 13

C.1. पंचवाद्यम ____ 13

C.2. बीण जोगी (हरियाणा) ____ 13

C.3. मांगणियार (राजस्थान के लोक गायक) ____ 13

C.4. उत्तराखंड में चाचरी, रुमौल और न्योली ____ 14

C.5. पंडवानी (छत्तीसगढ़) ____ 14

C.6. कनियन कूथु ____ 14

D चित्रकला ____ 16

D.1. थांगका चित्रकला ____ 16

D.2. कांगड़ा चित्रकला ____ 16

VISION IAS

D.3. कलमकारी कला 17

D.4. कोंडाणे गुफाओं में शैल चित्रों की खोज 18

E. विविध कला रूप 19

E.1. कुटियट्टम 19

E.2. बाजीगर (पंजाब के कलाबाज़) 19

E.3. कलारीपयट्टु (केरल का मार्शल आर्ट) 20

E.4. बहरूपिया (राजस्थान के स्वांग कलाकार) 20

E.5. थांग टा (मणिपुर की मार्शल आर्ट कला) 20

E.6. मलखंब (महाराष्ट्र) 21

E.7. नाडा कुश्ती 21

E.8. फुलकारी 22

E.9. सहपीडिया 22

E.10. ज़रदोजी 23

E.11. चेत्तीनाड सूती साड़ीयां 24

F. जनजाति 25

F.1. अरुणाचल प्रदेश की निशि जनजाति 25

F.2. बाउल 25

F.3. टोडा जनजाति 26

F.4. असुर जनजाति 26

F.5. बोंडा जनजाति 27

F.6. सिद्दी जनजाति 27

F.7. जारवा जनजाति 28

G. मूर्तिकला और वास्तुकला 29

G.1. वडक्कुन्नाथन मंदिर 29

G.2. मुजीरिस विरासत परियोजना 30

G.3. चेरामन जुमा मस्जिद 31

G.4. पुरातन वस्तुओं के प्रति उदासीनता 31

G.5. कलाकृतियों की तस्करी 32

G.6. बोध गया-आध्यात्मिक राजधानी 32

G.7. अमरावती:आन्ध्र प्रदेश की नयी राजधानी 33

G.8. भारत के सर्वोत्कृष्ट वास्तुकार: चार्ल्स कोरिया 33

VISION IAS

G.9. तारा भगवती - बौद्ध शिलालेख ____ 34

G.10. प्राचीन ताम्र-पत्र पर उत्कीर्ण विषयवस्तु की व्याख्या ____ 34

G.11. चन्देस्वरर की चोल मूर्तिकला ____ 35

H. घटनाएं एवं पर्व ____ 37

H.1. जल्लीकट्टू ____ 37

H.2. ओणम महोत्सव ____ 37

H.3. वान्गाला महोत्सव मेघालय ____ 38

H.4. बतुकम्मा महोत्सव ____ 38

H.5. नव वर्ष महोत्सव ____ 38

H.6. लोसर महोत्सव लद्दाख ____ 39

H.7. सजिबू चेइरावबा समारोह मणिपुर ____ 39

H.8. मिजो के चप्चार कुट ____ 39

H.9. नबाकालेबार महोत्सव ____ 40

H.10. रम्मन ____ 40

H.11. अन्य त्योहार जो सुर्खीयों में रहे ____ 40

H.12. उज्जैन में सिंहस्थ कुंभ ____ 41

H.13. रामलीला पर दूसरा अंतर्राष्ट्रीय सम्मलेन ____ 41

H.14. भारतविद्या का विश्व सम्मलेन ____ 41

H.15. गंगा संस्कृति यात्रा ____ 42

H.16. कामागाटामारू प्रकरण ____ 42

I. सरकार द्वारा की गई पहलें ____ 43

I.1. अंडमान जेल में वीर सावरकर की पट्टिका ____ 43

I.2. देश के संस्कृति विश्वविद्यालय ____ 43

I.3. रानी गैडिंल्यू की स्वर्ण जयन्ती ____ 43

I.4. पंडित दीन दयाल उपाध्याय की स्वर्ण जयन्ती ____ 44

I.5. तात्या टोपे की 200 वीं जयंती ____ 44

I.6. कौशाम्बी में पुरातात्विक स्थल ____ 45

I.7.भारत लाओस सांस्कृतिक संबंध ____ 45

I.8. अमूर्त सांस्कृतिक विरासत और भारत की विविध सांस्कृतिक परंपराओं की रक्षा ____ 46

I.9. विरासत टैग ____ 46

I.10. साहित्य अकादमी ____ 47

VISION IAS

I.11. यूनेस्को के द्वारा संचालित क्रिएटिव सिटी नेटवर्क ____ 47

I.12. साहित्य के लिए 2015 का नोबेल पुरस्कार ____ 48

I.13. विश्व विरासत स्थलों को अपनाने के लिए निर्धारित नीति ____ 48

VISION IAS

A. व्यक्तित्व एवं लोग

(Personalities and People)

A.1. रुक्मणी देवी अरूंडेल

(Rukmani Devi Arundale)

- वह एक ब्रह्मविद्यावादी (Theosophist), भरतनाट्यम नृत्यांगना एवं नृत्य-निर्देशक और पशु अधिकारों के लिये कार्य करने वाली एक सक्रिय कार्यकर्ता थीं।
- वह भारतीय शास्त्रीय नृत्य शैली भरतनाट्यम के पुनरुत्थानवादियों में सबसे महत्वपूर्ण मानी जाती हैं। उन्होनें भरतनाट्यम को उसकी मूल 'सधीर" शैली जो कि देवदासियों (मंदिर नर्तकियों) के बीच प्रचलित थी, से पुनर्जीवित किया। उन्होनें पारंपरिक भारतीय कला और शिल्प की पुन: स्थापना के लिए भी काम किया।
- उन्हें 1956 में पद्म भूषण और 1967 में संगीत नाटक अकादमी फैलोशिप से सम्मानित किया गया था।
- उन्होंने कुछ संस्थानों की स्थापना भी की। **कलाक्षेत्र** नामक एक सार्वजनिक सांस्कृतिक और शैक्षिक केंद्र की स्थापना इसका एक प्रमुख उदहारण है।

A.2. सहज धारी सिख

(Sehjdhari Sikhs)

सहजधारी सिख कौन हैं?

- सहजधारी वे सिख होते हैं, जो बिना अमृतधारी हुए अथवा खालसा पंथ में दीछित हुए बिना ही सिख धर्म का पालन करते हैं। वे सिख धर्म के सभी सिद्धांतों एवं रीतियों को तो मानते हैं, लेकिन वे सभी क्रियाओं को अपने दैनिक क्रियाकलाप में नहीं अपनाते हैं।
- वे गुरु गोबिंद सिंह द्वारा प्रतिपादित खालसा पंथ की प्रतिज्ञाओं का पालन नहीं करते हैं।
- वे हिंदू, सिख या अन्य परिवारों में पैदा होने के बावजूद श्री गुरु ग्रंथ साहिब में प्रतिपादित शिक्षाओं का अनुसरण करते हैं।

A.3. पंचतीर्थ : डॉ. बी. आर. अम्बेडकर

(Panchteerth: B. R. Ambedkar)

- भारत सरकार डॉ. बी. आर. अम्बेडकर के सम्मान में पांच स्थानों को “पंचतीर्थ” के रूप में विकसित करेगी।
- पंचतीर्थ में शामिल किए जाएंगे- महू में स्थित अम्बेडकर का जन्मस्थान, लंदन में वह जगह जहां वह ब्रिटेन में पढ़ाई के दौरान रुके थे, नागपुर स्थित ‘दीक्षाभूमि’, जहां उन्होंने शिक्षा ली थी, दिल्ली स्थित 'महापरिनिर्वाणस्थल', और मुंबई स्थित ' चैत्य भूमि'।

VISION IAS

B. कला शैली

(Art Forms)

नृत्य

B.1. कलामंडलम सत्यभामा

(Kalamandalam Sathyabhama)

- वह एक भारतीय शास्त्रीय नृत्यांगना, गुरु, और नृत्य-निर्देशिका थीं, जो अपने प्रदर्शन के लिए जानी जाती थीं तथा मोहिनीअट्टम में उन्हें पांडित्य हाशिल था।
- वर्ष 2014 में, कला और संस्कृति के क्षेत्र में योगदान हेतु उन्हें पद्म श्री से नवाजा गया।
- वह भरतनाट्यम, मोहिनीअट्टम और कथकली तीनो ही नृत्य कला रूपों में पारंगत थीं।
- उन्हें मोहिनीअट्टम को बाह्य प्रभावों से मुक्त कर परिशुद्ध रूप में प्रस्तुत करने का श्रेय दिया जाता है। उन्होंने इस कला के प्रदर्शन के तरीकों में इस प्रकार बदलाव किया ताकि इसके भावनात्मक पहलु को कड़ाई से लास्यम से जोड़ा जा सके।

मोहिनीअट्टम

- मोहिनीअट्टम केरल का एक शास्त्रीय नृत्य है, जिसका प्रदर्शन महिलाओं द्वारा किया जाता है।
- इस नृत्यकला को 'मोहिनी' के नृत्य के रूप में जाना जाता है। मोहिनी रूप वस्तुतः विष्णु के द्वारा भस्मासुर का वध करने के लिए धारण किया गया था।
- लोचशील शारीरिक गति तथा चेहरे के द्वारा स्थूल भावों को अभिव्यक्त करना वस्तुतः अधिक नारीत्व पृकृति की अभिव्यक्तियाँ हैं। यही कारण है कि नृत्यकला के इस रूप का प्रदर्शन माहिलाओं के द्वारा किये जाने हेतु अधिक उपयुक्त होता है।
- त्रावणकोर के महाराजा ने इस नृत्य को इसके आधुनिक शास्त्रीय रूप में रूपांतरित किया।
- इस नृत्य को घुमावदार उद्दात् शारीरिक मुद्राओं के लिए जाना जाता है। इस नृत्य में शारीरिक मुद्राओं में आकस्मिक परिवर्तन नहीं होता।
- मोहिनीअट्टम नृत्य कला रूप अभिनय केन्द्रित है। कलाकार चरित्र और भावों को आत्मसात कर लेता है, जिनकी अभिव्यक्ति वह हाथ और चेहरे की भावभंगिमाओं के माध्यम से करता है।

B.2. गोतिपुआ नृत्य (ओडिशा)

[Gotipua Dance (Odisha)]

- गोतिपुआ, भगवान जगन्नाथ की प्रशंसा में किये जाने वाले ओडिसी लोकनृत्य की एक पारंपरिक नृत्य शैली है।
- शाब्दिक रूप में गोतिपुआ का उड़िया में अर्थ होता है:- 'एक लड़का'। लेकिन यह नृत्य समूहों में किया जाता है।
- नृत्य कला की इस शैली का उद्भव 16वीं सदी के प्रारंभ में माना जाता है।
- जब महरी (मंदिरों में महिला नर्तकी) नृत्य का ह्रास होने लगा, तो पुरुष नर्तकों ने महिला नर्तकियों के जैसे हीं वस्त्रों को धारण कर इस परंपरा को जारी रखा।

VISION IAS

- गोतिपुआ में नर्तक खुद गाते हैं।
- लड़कों को इस कला को सीखने के लिए बहुत कम उम्र में ही नृत्य सीखना प्रारंभ करना होता है, और किशोरावस्था तक प्रशिक्षण प्राप्त करना होता है, जब उनके अन्दर शारीरिक लैंगिक बदलाव स्पष्ट होने लगते हैं।

B.3. पुरुलिया छऊ (पश्चिम बंगाल)

[Purulia Chhau (West Bengal)]

- छऊ नृत्य भारत के सबसे प्रसिद्ध आदिवासी मार्शल नृत्यों में से एक है। इस नृत्य को मुखौटे के साथ प्रदर्शित किये जाने के कारण ही इसका नाम छऊ पड़ा (छाया का अर्थ मुखौटा होता है)।
- मुखौटा तथा एक बड़ी टोपी वस्तुतः छऊ नर्तकों की आभूषण युक्त वेशभूषा होती है। छऊ नृत्य भगवान शिव को समर्पित गजानन महोत्सव का एक अनिवार्य हिस्सा है।
- छऊ नृत्य रामायण और महाभारत की कहानियों की पृष्ठभूमि पर आधारित होती है।
- इस नृत्य में तेज धुन और तीव्र ध्वनि उत्पन्न करने वाले ढोल और मरुई जैसे वाद्यों का प्रयोग होता है।

B.4. सिक्किम के मठों में किया जाने वाला छाम नृत्य

(Chaam of Sikkim Monasteries)

- छाम लामाओं के द्वारा त्योहारों के दौरान विभिन्न मठों पर प्रदर्शित किया जाने वाला एक आनुष्ठानिक नृत्य है। रंगीन मुखौटों का प्रयोग इसकी एक प्रमुख विशेषता है।
- रंगीन मुखौटों के साथ पारंपरिक वस्त्रों से सुसज्जित लामाओं द्वारा किये जाने वाले छाम नृत्य में विशेष रूप से प्रयोग होने वाली तलवारें इस नृत्य की विशेष पहचान हैं। ढोल की ध्वनि पर कूद और छलांग, सींग और संगीत इस नृत्य के विशेष आकर्षण है ।
- छाम नृत्य के विभिन्न रूप प्रचलित हैं, जैसे- पौराणिक शेर को समर्पित सिंघी छाम तथा याकों को समर्पित याक छाम।

B.5. बधाई नृत्य (बुंदेलखंड)

[Badhai Dance (Bundelkhand)]

- बधाई, मध्य प्रदेश तथा विशेष रूप से बुंदेलखंड क्षेत्र में प्रचलित सर्वाधिक लोकप्रिय लोक नृत्यों में से एक है ।
- बधाई नृत्य शीतला देवी को धन्यवाद देने और उनका आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए किया जाता है।
- इस नृत्य के अंतर्गत किये जाने वाले धन्यवाद अथवा बधाई के इस विशेष प्रदर्शन के करण ही इस नृत्य का नाम बधाई पड़ा है।
- बधाई नृत्य में पशु भी हिस्सा लेते हैं और कई गांवों में घोड़ी के द्वारा भी इस नृत्य प्रदर्शित किया जाता है।
- इस नृत्य में ढपला, टिमकी, रंतूला, लोटा और अलगोजा जैसे वाद्ययंत्रो का प्रयोग होता है।

VISION IAS

B.6. पंथी नृत्य (छत्तीसगढ़)

[Panthi Dance (Chhattisgarh)]

- यह नृत्य शैली सतनामी समुदाय में प्रचलित है। इसका प्रदर्शन अत्यंत भावपूर्ण ढंग से मधुर संगीत की धुनों पर किया जाता है।
- यह मुख्य रूप से पुरुष नर्तकों द्वारा संपन्न किया जाता है। इस नृत्य के प्रदर्शन हेतु शरीर के अधिक लचीलेपन तथा शारीरिक क्षमता की आवश्यकता होती है क्योकि इस नृत्य में अनेक चुनौतीपूर्ण मुद्राएँ सम्मिलित होती हैं।
- कलाकार इस अवसर के लिए विशेष रूप से स्थापित किये गए एक जैत खम्ब (Jaitk-हम्ब) के चारों ओर नृत्य करते हैं। इस अवसर पर गाया जाने वाला गीत उनके आध्यात्मिक प्रमुख का गुणगान करते हुए कबीर, दादू आदि के द्वारा प्रतिपादित निर्वाण संबधी दर्शन को व्यक्त करता है।
- इस नृत्य में मृदंग, झांझ और ढोल जैसे पारंपरिक वाद्ययंत्रों का प्रयोग किया जाता है।

B.7. डोल्लू कुनिथा नृत्य (कर्नाटक)

[Dollu Kunitha Dance (Karnataka)]

- डोल्लू कुनिथा वस्तुतः ढोल की धुन पर किया जाने वाला कर्नाटक का एक लोकप्रिय नृत्य है।
- इस नृत्य में प्रयुक्त गीत सामान्यतः धार्मिक, युद्ध और वीरता जैसे भावों पर आधारित होते हैं।
- इस नृत्य में रंगीन कपड़ों से सजे हुए बड़े ढोल का प्रयोग किया जाता है जिसे पुरुष गले में लटकाते हैं।
- इस नृत्य में मुख्य जोर पाँव एवं कदमों के सहज और त्वरित संचलन पर दिया जाता है।
- डोल्लू कुनिथा कर्नाटक के आदिवासियों के आनुष्ठानिक नृत्य का एक हिस्सा है।

B.8. पुंगचोलम (मणिपुर)

[Pungcholom (Manipur)]

- यह नृत्य कला मार्शल आर्ट और पारंपरिक मेइबी जागोई नृत्य के सम्मिलन से विकसित हुई है। यह सत्रहवीं सदी से चली आ रही परंपरा का अंग है।
- पगड़ी, धोती और तुलसी के बीज से निर्मित माला इस नृत्य में धारण की जाने वाली पारंपरिक वेशभूषा के अंग होते हैं।
- इस नृत्य को ब्रह्मा, विष्णु और शिव का प्रतिनिधित्व करने वाला माना जाता है। नृत्य करने वालों का विश्वास है कि इस नृत्य को करने से सकारात्मक उर्जा मिलती है।
- यह विवाह, उपासना और यहां तक कि अंत्येष्टि के दौरान मणिपुर में किया जाता है।
- एक पुंग, (ढोल के लिए मणिपुरी नाम), प्रत्येक नर्तक के गले में लटका हुआ होता है। एक बार नृत्य के लय में आने के उपरांत नर्तक ऊँची कूद लगाते हैं और हवा में उछलते हैं ।

VISION IAS

B.9. सिंघी छाम (सिक्किम का स्नो लायन डांस)

[Singhi Cham (The Snow Lion Dance of Sikkim)]

- यह चेहरे पर 'स्नो लायन' (सिक्किम का सांस्कृतिक प्रतीक) का मुखौटा लगा कर प्रदर्शित किया जाने वाला एक नृत्य है।
- नर्तक स्नो लायन के जैसे वस्त्रों से सुसज्जित होते हैं। गुरु पद्मसंभव ने स्नो लायन को यहां के भूमि के रक्षक देवता के रूप में बताया है।
- गुरु पद्मसंभव भूटान, सिक्किम, तिब्बत आदि क्षेत्रों में बुद्ध की मान्याताओं की शिक्षा देने वाले पहले आध्यात्मिक व्यक्तित्व के रूप श्रद्धेय माने जाते हैं।
- यह नृत्य शरद ऋतु में, खान-चेन जोंग्पा या कंचनजंगा पर्वत जिसे इस क्षेत्र में आराध्य समझा जाता है, की आराधना में किया जाता है। खान-चेन जोंग्पा या कंचनजंगा पर्वत को स्नो-लायन का प्रतीक माना जाता है।

B.10. चेराव (मिजोरम का बांस नृत्य)

[Cheraw (Bamboo Dance of Mizoram)]

- यह माना जाता है कि इस नृत्य का अस्तित्व पहली शताब्दी ईस्वी से ही है, जब मिजो लोग वर्तमान मिजोरम में अपने प्रवास के पूर्व चीन के यूनान प्रान्त में निवास करते थे।
- दक्षिण पूर्व एशिया में निवास करने वाली कुछ जनजातियों में भी यह नृत्य एकाधिक रूपों में अलग-अलग नामों के साथ प्रचलित है।
- एक दूसरे की ओर मुख करके बैठे पुरुष क्षैतिज और तिरछे रूप से लम्बे बांस के डंडो हाथ से पकड़ते हैं। आकर्षक धुन पर ये बांस के डंडे लयबद्ध रूप से समीप और दूर ले जाये जाते हैं।
- पुआनचेई (Puanchei) कावरचेई (Kawrchei) वकिरिया (Vakiria) तथा थिहना (Thihna) जैसी रंगीन मिजो वेशभूषा में लड़कियां कर्णप्रिय धुन पर लयबद्ध रूप से बांस के अन्दर और बाहर नृत्य करती हैं।
- यह नृत्य अब लगभग सभी उत्सवों के दौरान किया जाता है। घंटा और ढोल इस नृत्य के प्रमुख वाद्ययंत्र हैं।

B.11. थपेट्टा गुल्लू (आंध्र प्रदेश)

[Thapetta Gullu (Andhra Pradesh)]

- यह आंध्र प्रदेश के श्रीकाकुलम जिले की एक नृत्य शैली है।
- इस नृत्य में दस से अधिक लोग स्थानीय देवी की स्तुति में गीत गाते हुए भागीदारी करते हैं।
- नर्तक अपनी गर्दन में लटक रहे ढोल का उपयोग विविध लयों को उत्पन्न करने में करते हैं।
- कमर के चारों ओर लटकती खनकती घंटिया नर्तकों की वेशभूषा के विशिष्ट अंग होते हैं।
- परंपरागत रूप से इस नृत्य का प्रदर्शन केवल पुरुषों के द्वारा किया जाता है।
- इस नृत्य की विषयवस्तु रामायण और महाभारत से ली गई है।

VISION IAS

B.12. रऊफ (जम्मू-कश्मीर)

[RAUF (J&K)]

- यह कश्मीर के सबसे लोकप्रिय पारंपरिक नृत्यों में से एक है।
- इस खूबसूरत नृत्य शैली का प्रदर्शन लगभग सभी उत्सवों और विशेष रूप से ईद और रमजान के मौके पर किया जाता है।
- यह नृत्य दो पंक्तियों में एक-दूसरे की ओर अभिमुख सुन्दर वेशभूषा में सुसज्जित महिलाओं के समूह द्वारा किया जाता है।
- इस नृत्य में सरल कदमताल का प्रयोग होता है जिसे स्थानीय भाषा में चकरी कहा जाता है।
- नृत्य अक्सर अच्छे मौसम का जश्न मनाने के लिए बसंत के मौसम में किया जाता है।

B.13. मयूर नृत्य (यूपी)

[Mayur Dance (U.P.)]

- यह नृत्य उत्तर प्रदेश के ब्रज क्षेत्र में लोकप्रिय है।
- मयूर या मोर नृत्य राधा और कृष्ण के प्रेम संदेशों पर आधारित है।
- एक संक्षिप्त वियोग की स्थिति में व्यथित राधा मयूर के रूप में ही कृष्ण की छवि देख कर स्वयं को सांत्वना देती हैं।
- अंततः वह राधा के आत्म निवेदन से प्रभावित होकर मयूर के छद्म वेश में स्वयं ही उपस्थित हो कर प्रिय राधा के साथ नृत्य में भागीदारी करते हैं।

B.14. राथवा आदिवासी नृत्य (गुजरात)

[Rathwa Tribal Dance (Gujarat)]

- गुजरात के दक्षिणी भाग के पहाड़ी क्षेत्र रथ-विस्तार में निवास करने वाले राथवा द्वारा **राथवा नि घेर** नृत्य का प्रदर्शन होली के अवसर पर किया जाता है।
- घेर (संगीत के साथ नृत्य) का प्रदर्शन धुलेंडी के दिन आरंभ होता है, जो वास्तव में 'रंगीन धूलों के उड़ने का दिन' होता है।
- पुरुष और महिला दोनों एक साथ 20 या 25 के समूह में नृत्य करते हैं।
- सभी राथवा नृत्य जो विभिन्न अवसरों पर किये जाते हैं, मौसम चक्र के साथ संबद्ध होते हैं। राथवा नि घेर को रंगीन और शानदार नृत्य के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

VISION IAS

B.15. जागोर लोक नृत्य

(Jagor folk dance)

- यह गोवा की एक नृत्य-नाटिका है जो किसी सतत कथा पर आधारित नहीं होती है।
- यह हिंदुओं और ईसाइयों द्वारा संयुक्त रूप से प्रदर्शित की जाती है।
- इसमें नदी के पानी से गांव की रक्षा करने के लिए देवता से प्रार्थना की जाती है। ऐसा विश्वास है कि यह प्राकृतिक आपदाओं और पारस्परिक झगड़ों को टालता है।
- जागोर का शाब्दिक अर्थ “जागरण” होता है। यह दृढ़ विश्वास है कि रात भर का प्रदर्शन वस्तुतः वर्ष में एक बार देवताओं को जागता है और वे पूरे वर्ष गांव की रखवाली के लिए जागते रहते हैं।
- पर्णी जागोर जोकि एक प्राचीन मास्क डांस (मुखौटा नृत्य) है, मुख्यतः गोवा का एक नाटक है। अच्छी तरह से तैयार की गई चित्रित लकड़ी के मास्क का प्रयोग, विभिन्न पशुओं, पक्षियों, सुपर प्राकृतिक शक्ति, देवताओं, राक्षसों और सामाजिक पात्रों को प्रदर्शित करते हुए पर्णी परिवारों द्वारा इसका प्रदर्शन किया जाता है।
- इसका प्रदर्शन गोवा के लोक वाद्ययंत्र नगारा/दोब, घुमट, मदाले (Nagara/Dobe, Ghumat, Madale) आदि का प्रयोग कर किया जाता है।

C संगीत

C.1. पंचवाद्यम

(Panchavadyam)

- पंचवाद्यम का सामान्य अर्थ होता है- पांच वाद्ययंत्रों की एक ऑर्केस्ट्रा। यह मंदिर कला का एक रूप है, जिसका विकास केरल में हुआ है।
- इसके पाँच उपकरणों में से चार -- तिमिला, मद्दलम, इलाथलम और इदक्का (timila, maddalam, ilathalam and idakka) – थाप देकर बजाने वाले यंत्र हैं, जबकि पांचवा अर्थात कौम्बू (kombu) फूंक कर बजाया जाने वाला वाद्यवृंद है।
- पंचवाद्यम पिरामिड जैसा एक लयवद्ध ध्वनि समूह है जिसकी आवाज लगातार बढ़ती जाती है। इसकी थाप बीच-बीच में आनुपातिक रूप से घटती भी है।
- ये वाद्य किसी धार्मिक अनुष्ठान से जुड़े नहीं हैं और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इसमें कलाकार अपनी रूचि के अनुसार थाप देकर तिमिला, मद्दलम और इडक्का की ध्वनियों में बदलाव कर सकता है।

C.2. बीण जोगी (हरियाणा)

[Been Jogi (Haryana)]

- जोगी हरियाणा के पारंपरिक लोक गायक हैं जो अपने लोकगीत और संस्कृति के कई पहलुओं को प्रतिबिंबित करते हैं।
- वे उत्कृष्ट गाथा गीतों, भक्ति गीतों, कहानियों, कविताओं और कुछ सांत्वना गीतों का भी गायन करते हैं।
- उनकी कला मरणासन्न के समीप है तथा इसके विलुप्त होने का भी खतरा है।
- वे बीण के माध्यम से अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं, जिसे सपेरों के द्वारा भी प्रयोग किया जाता है।
- कलाकार सामान्यतः संतों या योगियों के समान भगवा वस्त्र पहनते हैं।

C.3. मांगणियार (राजस्थान के लोक गायक)

[Manganiar (folk singers of Rajasthan)]

- मांगणियार पश्चिमी राजस्थान के मुख्यतः तीन जिलों अर्थात् जोधपुर, बाड़मेर और जैसलमेर के ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाला एक छोटा सा आदिवासी समुदाय है।
- उनके गीत रेगिस्तान के एक मौखिक इतिहास के रूप में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित किये जाते हैं।
- इस समुदाय द्वारा बजाया जाने वाला धनुषाकार वाद्ययंत्र कमैचा वस्तुतः स्थानीय सामग्री से निर्मित होती है और देखने में इसकी संरचना सरल और अधूरी सी जान पड़ती है किन्तु इसके द्वारा उत्पन्न किये जाने वाले संगीत की प्रकृति अत्यंत जटिल होती है।
- इसमें संगीत उत्पन्न करने के लिए मुख्य तार के अतिरिक्त सहायक तार या ड्रोन तार भी होता है जिसे झरे (Jhare) या झरे की तार (Jhare-ke-taar) भी कहा जाता है, जो वाद्य यंत्र के मुख्य भाग पर आश्रित होता है तथा यह अधिक ध्वनि उत्पन्न करता है।
- उनके द्वारा प्रयुक्त अन्य उपकरणों में ढोलक और खड़ताल शामिल हैं।
- मांगणियार के द्वारा कल्याणी, कमायची आदि रागों को प्रस्तुत किया जाता है जिनकी हमारे शास्त्रीय संगीत से बहुत कम समानता है।

VISION IAS

C.4. उत्तराखंड में चाचरी, रुमौल और न्योली

(Chachri, Rumaul and Nyoli in Uttrakhand)

- ये उत्तराखंड के कुमाऊं क्षेत्र के अल्मोड़ा और पिथौरागढ़ क्षेत्रों में प्रचलित लोक संगीत हैं।

C.5. पंडवानी (छत्तीसगढ़)

[Pandavani (Chhattisgarh)]

- यह छत्तीसगढ़ में प्रचलित एक लोक गीत है जिसमें पांडवों की कहानी का वर्णन किया जाता है।
- परंपरागत रूप से यह पुरुषों द्वारा प्रदर्शित किया जाता था, लेकिन अब महिलाएं भी इसका प्रदर्शन करती हैं।
- इसमें एक मुख्य कलाकार और कुछ सहायक गायक और संगीतकार होते हैं।
- मुख्य कलाकार एक के बाद एक प्रकरण प्रस्तुत करता है तथा परिदृश्य में पात्रों को अपने अभिनय के माध्यम से जीवंत करता चला जाता है, कभी-कभी वह बीच में नृत्य भी प्रस्तुत करता है।
- प्रदर्शन के दौरान वह अपने हाथ में पकड़े हुए इकतारे की लय पर अपना गीत प्रस्तुत करता है।
- पंडवानी गायन की दो शैलियाँ प्रचलित हैं: वेदमति और कापालिक।

C.6. कनियन कूथु

(Kaniyan Koothu)

- कनियन कूथु तमिलनाडु में मंदिर त्योहारों के अवसर पर प्रदर्शित की जाने वाली एक पारंपरिक कला है जिसमे केवल पुरुष भाग लेते हैं।
- कनियन कूथु नाम वस्तुतः इसके कलाकारों के समुदाय कनियन से लिया गया है। कनियन एक अनुसूचित जनजाति है।
- कनियन कूथु कम से कम 300 वर्ष पुरानी कला है एवं 17वीं शताब्दी से इसके संकेत मिलते हैं।

वाद्य यंत्र

- सामान्यतः नृत्य मंडली में छः सदस्य होते हैं।
- वाद्य यंत्रः मगुदम या फ्रेम ड्रम मुख्य वाद्य यंत्र है। इसमें वृत्ताकार फ्रेम पर नए चमड़े को इमली के बीज से बने गोंद से चिपकाकर स्थायित्व दिया जाता है।
- मुख्य गायक अन्नावी (annavi) कहलाता है जो मंडली का नेतृत्व भी करता है।
- यह कला केवल मनोरंजन के लिए नहीं है बल्कि इसका अत्यधिक धार्मिक महत्व भी है।
- नृत्य मंडली कभी भी विवाह, अंतिम संस्कार या घरों में होने वाले समारोहों में इस नृत्य का प्रदर्शन नहीं करती है।
- इसके कलाकार कोई औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं करते हैं। गायक अपने पिता को सुनकर ही गीत और कहानियां सीख लेते हैं।

VISION IAS

- कनियन कूथु में पौराणिक कहानियों जैसे- मार्कंडेय और हरिश्चंद्र पुराण और स्थानीय देवताओं के अतिरिक्त रामायण तथा महाभारत की कथाओं का प्रदर्शन किया जाता है।

इतिहास

- इस कला का सर्वाधिक स्पष्ट सन्दर्भ मुक्कूदारपल्लू (नायक कालीन तमिल कविता) में है।
- किन्तु इस कला का वर्तमान स्वरूप वस्तुतः स्टेज परफॉर्मेंस (मंच प्रदर्शन) के समरूप है। तमिल नाटक से प्रभावित कला का यह मंचीय स्वरुप संभवतः 80 वर्ष पूर्व विकसित हुआ।

कनियन जनजाति

- कनियन तमिलनाडु के तिरुनेलवेली जिले में रहने वाला एक आदिवासी समुदाय है।
- इनकी आबादी 750 से भी कम है और वर्तमान में केवल लगभग 200 लोग ही इस कला का प्रदर्शन करते हैं।
- सामान्यतः ये अशिक्षित और गरीब हैं।

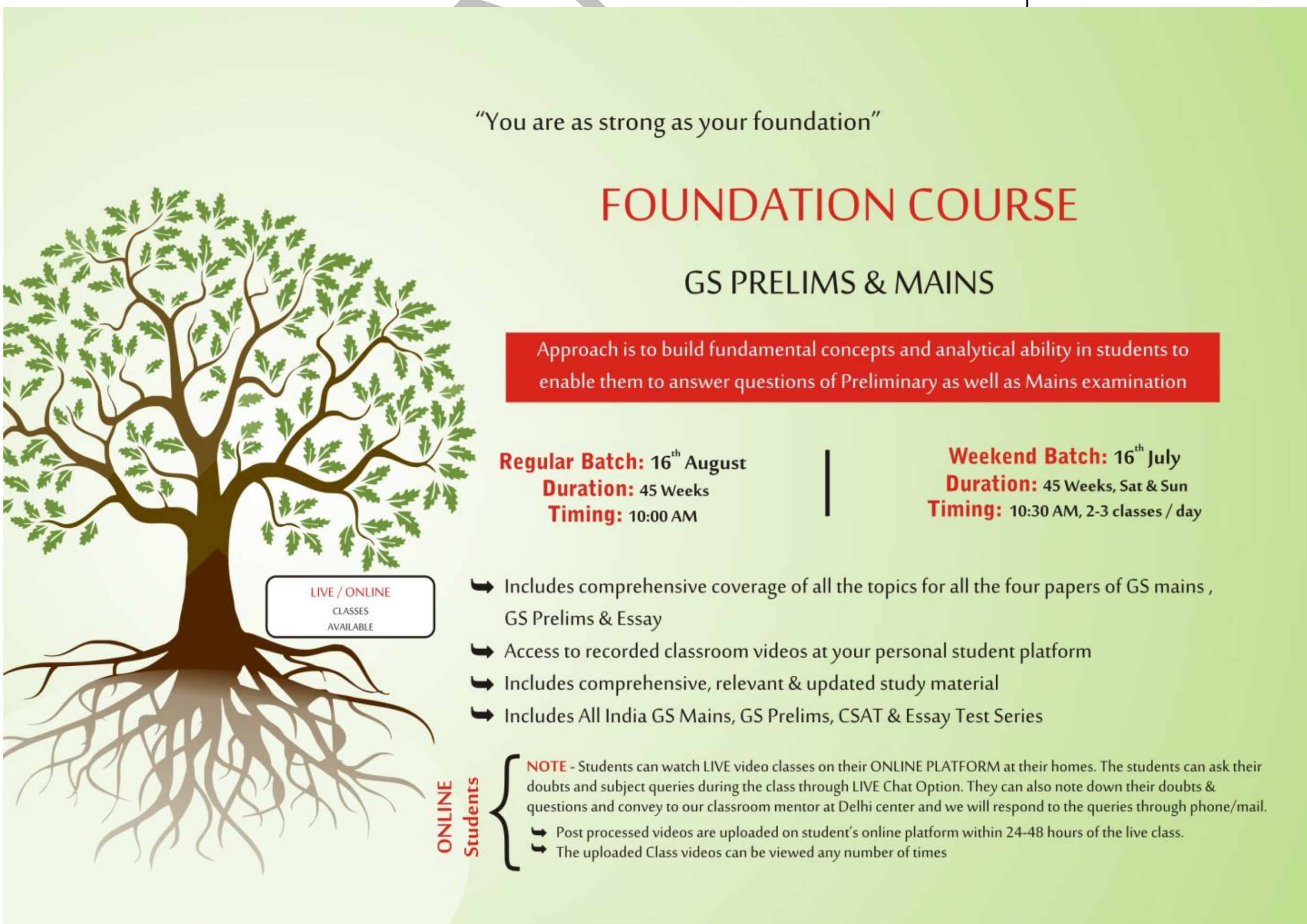

D चित्रकला

D.1. थांगका चित्रकला

(Thangka painting)

- थांगका पारंपरिक तिब्बती धार्मिक कला का एक रूप है, जिसका उद्भव भारत में हुआ है। इस चित्रकला के विषय-वस्तु में बुद्ध, बोधिसत्व, ध्यानमग्न देवियां, प्रसिद्द गुरु, और मंडल शामिल हैं।
- अधिकांश थांगका वस्तुतः स्क्रॉल चित्र हैं, जिन्हें रंगीन जरीदार कपड़े पर उकेरा गया है। इसके सामने की सतह को कवर करने के लिए एक पतले सिल्क के परदे का प्रयोग किया जाता है।
- यह विशिष्ट रूप से एक तिब्बती कला है, जिसकी प्रकृति अत्यधिक धार्मिक है तथा इसकी शैली अपने आप में अनूठी है।
- यद्यपि सदैव ये धार्मिक प्रकृति के होते हैं, किन्तु थांगका चित्रकला की विषय-वस्तु विविध और विस्तृत है।
- इनमें से अधिकांश कपड़े या कागज पर चित्रित हैं। सफेद कपड़े को पहले एक फ्रेम पर लगाया जाता है तत्पश्चात जल मिश्रित कोलाइड चॉक का इसके सतह पर लेपन किया जाता है। इसके सूख जाने के पश्चात टैल्क का प्रयोग करके पॉलिश की जाती है।
- इसके अतिरिक्त अनेक थांगका चित्रों की कशीदाकारी रेशम, रेशम टेपेस्ट्री, या पिपली के धागों का प्रयोग कर की गई है। थांगका कढ़ाई बहुरंगी रेशम धागों के प्रयोग के द्वारा की जाती है।

D.2. कांगड़ा चित्रकला

(Kangra painting)

- कांगड़ा चित्रकला वस्तुतः एक पहाड़ी चित्रकला शैली है, जिसे 17वीं और 19वीं शताब्दी के मध्य राजपूत शासकों का संरक्षण प्राप्त हुआ।
- जयदेव के गीत गोविंद के प्रकटन के उपरांत इस चित्रकला शैली को विशेष लोकप्रियता प्राप्त हुई। उल्लेखनीय है कि गीत गोविंद के अनेक प्रसिद्द पांडुलिपि चित्र काँगड़ा चित्रकला के विशिष्ट उदाहरण हैं।
- इन चित्रों में भगवान कृष्ण के जीवन से संबंधित घटनाओं और भक्ति से संबंधित अन्य विषयों और दृश्यों को चित्रित किया गया है।
- इसके अतिरिक्त महिला सौंदर्य, परिदृश्य, ग्रामीण इलाकें, नदियां, वृक्ष, पक्षियां, पशु, फूल आदि इन चित्रों का विषय-वस्तु हैं।
- कांगड़ा चित्रकार वानस्पतिक और खनिज अर्क से बने रंगों का प्रयोग किया करते थे। उन्होंने सादे और ताजे रंगों का प्रयोग किया।

VISION IAS

D.3. कलमकारी कला

(Kalamkari art)

- इस शब्द की उत्पत्ति फ़ारसी शब्द कलम तथा कारी (शिल्प कौशल) से हुई है, जिसका आशय 'कलम से चित्रकारी करना' है।
- आंध्र प्रदेश के कृष्णा जिले में पेड्दाना कस्बा अपनी कलमकारी के लिए विख्यात है।
- इन चित्रों को कपड़ों पर उकेरा जाता है। ये चित्र कपड़ों पर हाथ से बनाए जाते हैं तथा कपड़ों पर वेजिटेबल डाई (वनस्पति रंग) का प्रयोग कर ब्लॉक प्रिंटिंग भी की जाती है।
- कपड़ों पर वानस्पतिक रंगों का उपयोग करने वाली यह चित्रकला पद्धति भारत के कई भागों में प्रचलित है लेकिन कलमकारी कला का विकास मुख्यतः कलाहस्ती और मसुलीपटनम में हुआ है।
- वस्तुतः 15वीं सदी में विजयनगर के शासकों के संरक्षण में विकसित इस कला के अंतर्गत मंदिरों के आतंरिक भागों को चित्रित कपड़ों के पट्टिकाओं (panels) से सजाया जाता था।
- ये चित्र अत्यधिक टिकाऊ, आकार में नम्य और विभिन्न विषयों के अनुसार बनाये जाते हैं।
- इसके विषय मुख्यतः रामायण, महाभारत और हिन्दू पौराणिक कथाओं पर आधारित होते हैं।
- इनमें कपड़ों पर चित्रकारी की प्रक्रिया में कोई रासायनिक उत्पाद प्रयुक्त नहीं होता और इनके धोने से नदियों में प्रवाहित होने वाले रंग भी जल को प्रदूषित नहीं करते।

दो विशिष्ट शैलियाँ

- भारत में कलमकारी कला की दो विशिष्ट शैलियाँ प्रचलित हैं। प्रथम, श्रीकलाहस्ती शैली और द्वितीय मसुलीपटनम शैली। दोनों शैली की निर्माण प्रक्रियाओं में अंतर पाया जाता है।
- कलमकारी की मसुलीपटनम शैली फ़ारसी कला से प्रभावित है। इसमें सामान्यतः पेड़-पौधे, पत्तियाँ, फूल आदि को ठप्पों द्वारा मुद्रित (ब्लाक प्रिंटिंग) किया जाता है।

- श्रीकलाहस्ती शैली का विकास अधिकतर मंदिरों में हिन्दू शासकों के संरक्षण में हुआ है। इस प्रकार यह मुख्यतः धार्मिक पहचान रखती है। इस शैली में कलम के प्रयोग से मुक्तहस्त चित्र (फ्रीहैण्ड ड्राइंग) बनाये जाते हैं और उनमें हाथ से रंग भरे जाते हैं।

D.4. कोंडाणे गुफाओं में शैल चित्रों की खोज

(Rock Paintings Discovered in Kondane Caves)

- हाल ही में महाराष्ट्र के पश्चिमी क्षेत्र के रायगढ़ जिले की कोंडाणे गुफाओं में 40 शैल चित्रों की खोज की गई है।
- प्राकृतिक एवम् मानव निर्मित दोनों तरह की गुफाओं में ये चित्र पाए गए हैं।
- यहाँ से दो मानव निर्मित गुफाओं में एक अधूरा बौद्ध चैत्य और एक विहार पाए गए हैं। विहार का अर्थ मठ (रहने का स्थान) होता है।
- ऐसा बौद्ध प्रार्थना सभागार जिसके एक छोर पर स्तूप हो, चैत्य कहलाता है।
- इन बौद्ध गुफाओं में चट्टानों को काटकर की गई वास्तुकला बौद्ध धर्म के हीनयान प्रावस्था से संबंधित है।
- यह एक महत्वपूर्ण खोज है क्योंकि इससे पहले हमें महाराष्ट्र के इस क्षेत्र में शैल-उत्कीर्ण चित्रकला के अस्तित्व के बारे में पता नहीं था।
- इन गुफाओं में एक विचित्र पौराणिक आकृति का चित्र पाया गया है, जो संभवतः एक दानव का है।
- अन्य चित्र रोजमर्रा की जिंदगी और आखेटों, जैसे कि, हिरण के शिकार को दर्शाते हैं।

इन चित्रों की शैली और अभिव्यक्ति यह प्रदर्शित करती है कि वे दूसरी शताब्दी ई.पू. व उसके उपरांत बनाए गए थे।

VISION IAS

E. विविध कला रूप

(Miscellaneous Art Form)

E.1. कुटियट्टम

(Kutiyattam)

- कुटियट्टम प्राचीन काल से प्रचलित रंग मंच कला का एक रूप है इसकी उत्पत्ति को दो हजार वर्ष पूर्व खोजा जा सकता है भारत के प्रख्यात संस्कृत नाटकों से भी इसकी उत्पत्ति को संबद्ध किया जा सकता है।
- हाल ही में, कुटियट्टम को यूनेस्को द्वारा "मानवता के मौखिक और अमूर्त विरासत की कृतियों में उत्कृष्ट" के रूप में घोषित किया गया है।
- कुटियट्टम पुरुष अभिनेताओं जिन्हें चकयार (Chakyars) तथा महिला कलाकारों जिन्हें नागिआर (Nangiars) कहा जाता है के एक समुदाय द्वारा किया जाता है। इस कला में ढ़ोल बजाने वालों को नाम्बियार्स कहा जाता है, रंगशालाओं को कुट्टमपालम (Kuttampalams) कहा जाता है।
- कुटियट्टम संस्कृत के शास्त्रीय स्वरुप और केरल की स्थानीय प्रकृति के संश्लेषण का प्रतिनिधित्व करता है।
- अभिनेताओं को इस कला में महारत प्राप्त करने के लिए दस से पंद्रह वर्ष के कठोर प्रशिक्षण से गुजरना होता है तभी वे अपनी श्वास पर नियंत्रण तथा चेहरे और शरीर की पेशियों में सूक्ष्म भावों की प्रस्तुति को रंग मंच के अनुसार परिवर्तित करने में समर्थ हो पाते हैं।
- एक अभिनेता की क्षमता किसी प्रकरण के सभी पक्षों को विस्तृत रूप में प्रदर्शित करने में मानी जाती है अतः इस कला के अंतर्गत किया जाने वाला प्रदर्शन कभी-कभी 40 दिनों तक चलता रहता है।

E.2. बाजीगर (पंजाब के कलाबाज़)

[BAZIGAR (Acrobats of Punjab)]

- ये भारत और पाकिस्तान में फैली पंजाब की अनुसूचित जातियों का एक समुदाय है।
- मूल रूप से खानाबदोश प्रकृति का यह समुदाय मूलतः अपने आपको राजस्थान के राजपूतों से संबद्ध करता है। इन्होंने पिछली 3 शताब्दी में उत्तर पश्चिम भारत में बसना शुरू किया।
- इनका मुख्य पेशा बाजी (कूदना और कलाबाजियाँ करना) है किन्तु वर्तमान में समुदाय के अधिकांश व्यक्ति अनियमित श्रमिक के रूप में काम करते हैं।
- बाजी के पेशे के अस्थायी प्रकृति के होने के कारण इनकी आर्थिक स्थिति बहुत खराब है।

VISION IAS

E.3. कलारीपयट्टु (केरल का मार्शल आर्ट)

(KALARIPAYATTU)

- कलारीपयट्टु पांच सौ से अधिक वर्षों से प्रचलित केरल की स्वदेशी मार्शल आर्ट है।
- यह गुरु-शिष्य परम्परा के माध्यम से सदियों से सुरक्षित है।
- यह एक समग्र कला है जिसमें दूसरों पर आक्रमण के साथ ही उससे बचाव की तकनीक भी शामिल है।
- इसके तीन क्षेत्रीय रूप हैं जिनमें उनकी आक्रामक और रक्षात्मक शैलियों के आधार पर विभेद किया जाता है।
- कलारीपयट्टु तकनीक कदम (चुवातु) और मुद्रा (वादिवु) का संयोजन है।
- तमिल और मलयालम में कलारी का अर्थ स्कूल या प्रशिक्षण हाल जहां मार्शल आर्ट सिखाई जाती है।

E.4. बहरूपिया (राजस्थान के स्वांग कलाकार)

[Bahurupiya (mimicry artists from Rajasthan)]

- बहरूपिया शब्द का उद्भव संस्कृत भाषा के बहु (कई) और रूप (प्रकार) शब्दों के संयुक्त रूप से हुआ है।
- वर्तमान में बहरूपिया कला के प्रदर्शन को केवल भांडो का कार्य मान लिया गया है किन्तु अतीत में ब्राह्मण सहित विभिन्न जातियों के सदस्य, गांवों के साथ ही अदालतों में इस कला का प्रदर्शन करते थे।
- बहरूपिया की कला का मुख्य तत्व लोगों को प्रचलित चरित्रों के रूप से अधिकतम समरूपता (impersonation) का अनुभव करा देने की क्षमता है।
- राजस्थान में किसी व्यक्ति के पेशे सामाजिक स्थिति, अपेक्षित व्यवहार, और बोलने के प्रतिरूप को उसकी वेशभूषा और पहनावे से जाना जा सकता है संभवतः यही कारण है की बहरूपिया कला में बहरूपिया कलाकार की क्षमता उसकी वेशभूषा और सिंगार की कुशलता है।
- एक बहरूपिया का छद्म रूप को भेस कहा जाता है,जो संस्कृत में कपड़ों या वेशभूषा के लिए प्रयोग में लाया जाता है।

E.5. थांग टा (मणिपुर की मार्शल आर्ट कला)

[Thang Ta (martial art form of Manipur)]

- मणिपुर के मेइति समुदाय में मार्शलआर्ट का एक विशिष्ट रूप प्रचलित है जिसे थांग-टा कहा जाता है, जिसमें एक थांग (भाला) और एक टा (तलवार) प्राथमिक हथियार के रूप में प्रयुक्त होते हैं।
- यह जीवन का एक तरीका है। व्यायाम, गतिशीलता, लड़ने की तकनीकों के माध्यम से अनुशासन पैदा करने के साथ ही आत्म-विश्वास को बढ़ावा, महिलाओं की रक्षा, बड़ों का आदर या राज्य की रक्षा की जा सकती है।

VISION IAS

- अरम्बाई (arambai) (यह अग्र भाग पारंपरिक विष से लेपित एक छोटा नुकीला भाला होता है), 'थांग' और चुन्गोई (chungoi) और अन्य कई शस्त्र थांग-टा को प्रभावशाली मार्शल आर्ट बनाते हैं।

E.6. मलखंब (महाराष्ट्र)

[Mallakhamb (Maharashtra)]

- मलखंब जैसा की इसके नाम से ही स्पष्ट है कुश्ती के खेल में अपने कौशल का अभ्यास करने के लिए पहलवानों द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला एक खम्भ (pole) है।
- लेकिन अब प्रवृत्ति में बदलाव आ गया है और इसे एक विशेष पहचान मिली है। मलखंब में एकाग्रता, गति और लचीलेपन की आवश्यकता होती है। यह हमारे शरीर विशेष रूप से रीढ़ की हड्डी के लिए एक अच्छा व्यायाम है।
- मलखम्ब का प्रारंभिक उल्लेख 12 वीं सदी में देखा जा सकता है।
- मलखंब का प्रदर्शन तीन तरीकों से किया जा सकता है। एक स्थिर खंभ पर, लटकते हुए खंभ पर या रस्सी पर। तीन दशक पहले, खंभ मलखंब के स्थान पर रस्सी आधारित मलखंब अधिक प्रचलित हो गया है।
- यह भारतीय रस्सी आधारित करतबों से निकट से संबद्ध है इसमें सतर्कता, ध्यान और संतुलन की अत्यधिक आवश्यकता होती है।

E.7. नाडा कुश्ती

(Nada Kusti)

- नाडा कुश्ती को 'बियॉन्ड दि बॉडी' (**'Beyond the Body'**) शीर्षक से एक अंतरराष्ट्रीय प्रकाशन के कवर पेज पर प्रसिद्ध पोलिश फोटोग्राफर Tomasz Gudzowaty द्वारा लिए गए 183 श्वेत-श्याम चित्रों के साथ स्थान दिया गया है। ये चित्र उन पारंपरिक खेलों का उल्लेख करते हैं जोकि गुमनामी में लुप्त हो रहे हैं।
- यह मैसूर के लोगों में गहरी पैठ रखने वाला कुश्ती का एक पारंपरिक रूप है।
- इस खेल को 17 वीं सदी के प्रारंभ से ही शाही संरक्षण प्राप्त हो चुका था। नाडा कुश्ती निम्न मध्यम वर्ग और ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों के बीच बहुत लोकप्रिय है।
- भारतीय कुश्ती के रूप का विकास मैसूर में हुआ जिसने चन्ना बोरन्ना और कोप्पल वसावईया के रूप में क्लासिक पहलवानों को जन्म दिया, जिन्होने अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में भी अपनी पहचान बनायी।
- आज यह खेल सिर्फ एक ग्रामीण मनोरंजन के रूप में ही बचा है और काफी हद तक दशहरा उत्सव तक ही सीमित है।

VISION IAS

E.8. फुलकारी

(Phulkari)

- इस कला का प्रमाण 15वीं शताब्दी से मिलता है।
- यह शिल्प का एक रूप है जिसमें शॉल और दुपट्टे पर सरल और बिखरी हुई डिजाइन में कढ़ाई की जाती है।
- जहां डिजाइन पर बहुत बारीक काम किया गया हो और पूरे वस्त्र पर कढ़ाई की गयी हो,वहां इसे बाग (फूलों का बगीचा) कहा जाता है।
- इसमें प्रयुक्त सिल्क के धागे को पट (pat) कहा जाता है।

E.9. सहपीडिया (Sahapedia)

(Sahapedia)

- यह एक ओपेन ऑनलाइन पोर्टल है जिसके माध्यम से भारत और दक्षिण एशिया में ऐसी सांस्कृतिक उपलब्धियों को पहचान और मान्यता प्रदान की जाएगी जो अब तक लोगों के आकर्षण का केंद्र नहीं रही है।
- 'सह' का तात्पर्य है साथ-साथ; जबकि 'पीडिया' शब्द ग्रीक भाषा से लिया गया है जिसका अर्थ है- सांस्कृतिक शिक्षा।
- विकिपीडिया के अनुरूप डिज़ाइन की गयी यह मुफ्त साइट सामाजिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र से लोगों को योगदान देने के लिए प्रोत्साहित करेगी।

वेबसाइट की विषयवस्तु को 10 श्रेणियों में बांटा गया है:

1. ज्ञान परंपरा
2. भौतिक और दृश्य कला,
3. निष्पादन कलाएँ,
4. प्रकृतिक वातावरण,
5. निर्मित विरासत,
6. सांस्कृतिक संस्थायें
7. व्यक्तित्व,
8. प्रथायें और अनुष्ठान
9. साहित्य और
10. भाषा,

- विकिपीडिया (जहाँ किसी भी व्यक्ति को अपना योगदान देने की स्वीकृति होती है) के विपरीत सहपीडिया पर किसी व्यक्ति द्वारा प्रस्तुत आलेख अथवा दी गयी सूचना की जाँच उस क्षेत्र के एक विशेषज्ञ द्वारा की जायेगी। ऐसे आलेख/सूचना के सत्यापन व संशोधन के पश्चात् उसे प्रकाशित किया जायेगा।

VISION IAS

- रामलीला, कपड़े की अजरक छपाई कला जैसे सांस्कृतिक विषयों पर सहपीडिया अन्य संगठनों के साथ गठबंधन के माध्यम से विशिष्ट कार्यक्रम और कार्यशालाओं का आयोजन करेगा।

E.10. ज़रदोजी

(Zardozi)

- ज़रदोजी धातु से की जाने वाली एक सुंदर कढ़ाई है,जो भारत में राजाओं और शाही खानदान के व्यक्तियों के पोशाक के लिए इस्तेमाल की जाती थी। फारसी शब्द ज़र (ZAR) का अर्थ सोना और दोज़ी (Dozi) का अर्थ कढ़ाई होता है।
- इसमें सोने और चांदी के धागे का उपयोग करके विस्तृत डिजाइन बनाए जाते हैं। साथ ही, कीमती पत्थर, हीरे, पन्ने, और मोती का प्रयोग भी किया जाता है।
- उपयोग: शाही टेंट की दीवारों, म्यानों, दीवार के पर्दे और शाही हाथी और घोड़ों के वस्त्रों को सजाने के लिए
- 17 वीं सदी में, अकबर के संरक्षण के तहत, जरदोजी अपने शिखर पर थी। औरंगजेब के शासनकाल के दौरान, शाही संरक्षण बंद होने के कारण इस शिल्पकला में गिरावट आई। भव्य कशीदाकारी को अवध के नवाबों द्वारा संरक्षण प्रदान किया गया था।
- 18 वीं और 19 वीं सदी में औद्योगीकरण के बाद इसमें और गिरावट आई।
- ज़रदोजी कशीदाकारी कार्य वस्तुतः लखनऊ ,भोपाल, हैदराबाद, दिल्ली, आगरा, कश्मीर, मुंबई, अजमेर और चेन्नई जैसे शहरों की विशेषता रही है।

 ©Vision IAS

- 2013 में भौगोलिक संकेतक रजिस्ट्री (GIR) द्वारा लखनऊ जरदोजी को भौगोलिक संकेतक (GI) पंजीकरण प्रदान किया गया। जरदोजी उत्पाद लखनऊ और 6 अन्य निकटवर्ती जिलों (बाराबंकी, उन्नाव, सीतापुर, रायबरेली, हरदोई और अमेठी) में निर्मित किये जाते हैं।

E.11. चेत्तीनाड सूती साड़ीयां

(Chettinad cotton saris)

- तमिलनाडु के शिवगंगा जिले के एक छोटे से शहर चेत्तीनाड से यह नाम इन साड़ियों को मिला है।
- चेत्तीनाड की पारंपरिक साड़ीयों को कानडंगी (Kandanghi) कहा जाता है जो सूत से बनी होती हैं।
- चेत्तीनाड साड़ियां को चटकीले रंगो जैसे मस्टर्ड रंग, ईंट जैसा लाल, नारंगी, बसन्ती और भूरे रंग के चेक (checks) का प्रयोग करके तैयार किया जाता हैं।
- चेक और टेंपल बॉर्डर चेत्तीनाड साड़ीयों में प्रयोग किए जाने वाले पारंपरिक पैटर्न हैं।

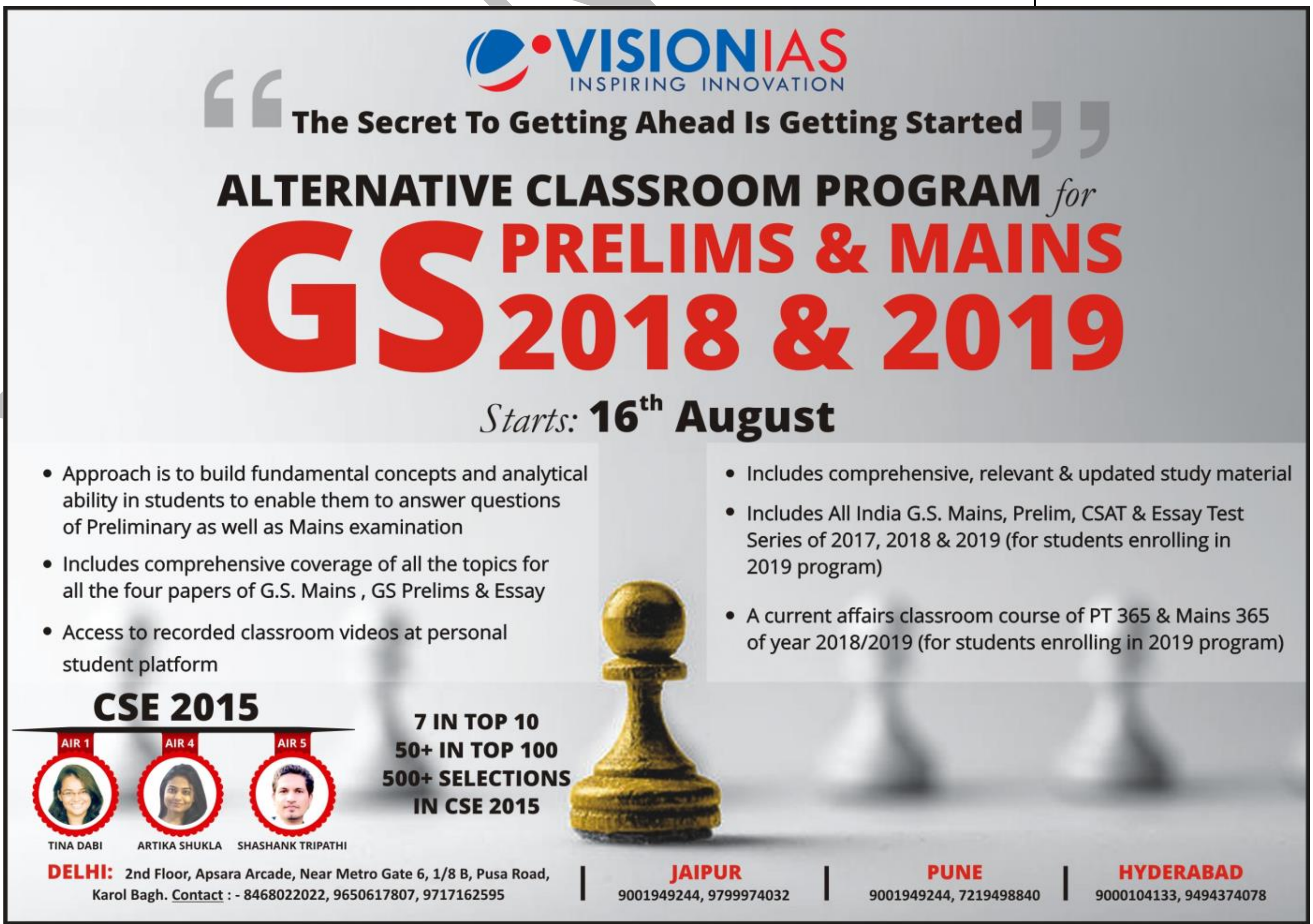

F. जनजाति

(Tribes)

F.1. अरुणाचल प्रदेश की निशि जनजाति

(Nyishis Tribe of Arunachal Pradesh)

- यह जनजाति अरुणाचल प्रदेश की सर्वाधिक जनसंख्या वाली (लगभग 3 लाख) जनजाति है।
- इस जनजाति के सदस्यों की आजीविका स्लैश एवं बर्न कृषि (स्थानांतरित कृषि) तथा शिकार एवं मत्स्यन पर आधारित है ।
- निशि जनजाति की सबसे अनूठी विशेषता इस जनजाति के पुरुषों द्वारा धारण किया जाने वाला ग्रेट इंडियन हार्नबिल की चोंच से सज्जित बांस निर्मित हेलमेट है।
- चावल इनकी मुख्य खाद्य फसल है जिसके साथ अधिकांशतः मछली आहार के रूप में प्रचलित है।
- इस जनजाति के लोग अपने पौराणिक पूर्वज के रूप में आभू थांई (AABHU THANYI) की पूजा करते हैं।
- परंपरागत रूप से ये शिकारी थे, किंतु अब बढ़ती जागरूकता के साथ प्रकृति से अपनी निकटता के कारण ये वनों एवं वन्य जीवन के संरक्षक बन गए हैं ।

F.2. बाउल

(BAUL)

- बाउल पश्चिम बंगाल और बांग्लादेश में रहने वाले लोगों का एक समूह है।
- इनमें मुख्य रूप से वैष्णव हिन्दू और सूफी मुसलमान शामिल हैं।
- ये अक्सर अपने विशिष्ट कपड़ों और संगीत वाद्य-यंत्रों से पहचाने जाते हैं।
- हालाकि बाउल बंगाली आबादी का केवल एक छोटा सा अंश ही हैं, मगर बंगाल की संस्कृति पर उनका काफी प्रभाव है।
- 2005 में, बाउल परंपरा को यूनेस्को द्वारा मानवता के मौखिक और अमूर्त विरासत की सर्वोत्तम कृतियों (Masterpieces of the Oral and Intangible Heritage of Humanity by UNESCO) की सूची में शामिल किया गया था।

बाउल संगीत

- इनके गीतों के बोलों (lyrics) पर हिंदू भक्ति आंदोलन और सूफ़ी (suphi) (कबीर के गीतों द्वारा प्रस्तुत किया गया सूफी गीत का एक रूप) का प्रभाव देखा जा सकता है।
- इनके द्वारा *एकतारा, दोतारा, खमक, डुग्गी, ढ़ोल* और *खोल जैसे संगीत* वाद्य यंत्रों का प्रयोग किया जाता है।

VISION IAS

F.3. टोडा जनजाति

(TODA tribe)

- **विस्तार:** दक्षिण भारत के नीलगिरि पठार।
- पिछली सदी के दौरान 700 से 900 के बीच जनसंख्या वाला एक चरवाहा समुदाय।
- अपने रूप-रंग, शिष्टाचार और रीति-रिवाज़ में अपने पड़ोसियों से अलग होने के कारण वे अपनी ओर अधिक ध्यान आकर्षित करते हैं।
- पिछले दशक के दौरान टोडा समाज और उनकी संस्कृति दोनों, सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील पर्यावरणीय पुनरुद्धार को समर्पित एक अंतर्राष्ट्रीय प्रयास के आकर्षण का केंद्र बने हुए हैं।
- टोडा भूमि अब नीलगिरि बायोस्फीयर रिजर्व का हिस्सा है। नीलगिरि यूनेस्को के अंतर्राष्ट्रीय जैवमंडल निचय के नेटवर्क में आता है जिसे अब (यूनेस्को द्वारा) विश्व विरासत स्थल भी घोषित कर दिया गया है।
- उनका एकमात्र व्यवसाय पशु-पालन और दुग्ध उत्पादन है।
- **धर्म:** भैंस पर केन्द्रित
- **खतरा:** कुछ टोडा चारागाह भूमि बाहरी लोगों द्वारा कृषि अथवा तमिलनाडु सरकार द्वारा वनीकरण के कारण कम हो गई है।

F.4. असुर जनजाति

(ASUR Tribe)

- इस जनजाति के सदस्य झारखंड, बिहार के कुछ हिस्सों, पश्चिम बंगाल और कुछ अन्य राज्यों में रहते हैं। 2011 की जनगणना के अनुसार, झारखंड में 22,459 और बिहार में 4,129 असुर जनजाति के लोग रहते हैं।
- असुर जनजाति के लोग महिषासुर (एक महिष-दानव जिसे देवी दुर्गा ने नौ रातों तक चलने वाले एक विकट युद्ध के बाद मार गिराया था) के वंशज होने का दावा करते हैं। हिंदू धर्म में इसी पौराणिक कथा को नौ दिवसीय दुर्गा पूजा के रूप में मनाया जाता है। लेकिन असुर जनजाति के लोग इसे 'महिषासुर दशैं' (Mahishasur Dasain) के रूप में मनाते हैं, जिसमें वह शोक की अवधि के दौरान काफी हद तक घर के अंदर रहते हैं।
- परंपरागत रूप से, असुर जनजाति के लोग लौह धातु गलाने वाले व स्थानांतरित कृषि करने वाले रहे हैं। इस प्रकार, वे खानाबदोश थे।
- एक मत के अनुसार, मगध साम्राज्य को असुरों द्वारा बनाए गए हथियारों से बहुत लाभ हुआ।
- लेकिन वन अधिनियम और विनियमों ने जंगलों पर से उनका पारंपरिक अधिकार छीन लिया है। इससे उनकी लोहा गलाने और स्थानांतरित कृषि के उनकी अभ्यास की प्रक्रिया भी प्रभावित हुई है। अब वे गांवों में बस गए हैं।

VISION IAS

- उनका अपना लोहा गलाने का परंपरागत कौशल भी खोता जा रहा है।
- यूनेस्को द्वारा असुर भाषा को "अनिवार्यतः लुप्तप्राय" (definitely endangered) के रूप में सूचीबद्ध किया गया है क्योंकि इसके केवल 7000 बोलने वाले शेष रह गए हैं।

F.5. बोंडा जनजाति

(BONDA Tribe)

- यह जनजाति ओडिशा, छत्तीसगढ़ और आंध्र प्रदेश के संधि-स्थल (जंक्शन) के पास दक्षिण-पश्चिमी ओडिशा के मलकानगिरी जिले के अलग-थलग पहाड़ी क्षेत्रों में रहती है। उनकी वर्तमान जनसंख्या 12,000 है।
- बोंडा का बाहर की दुनिया से लगभग कोई संबंध नहीं है। केवल 6% बोंडा साक्षर हैं।
- बोंडा समाज में महिलाओं को विशेषाधिकार प्राप्त होता है।
- बोंडा जनजाति की लड़कियाँ मोटे तौर पर ऐसे लड़कों से शादी करती हैं जो उनकी तुलना में कम से कम पांच से दस वर्ष छोटी उम्र के होते हैं। इस प्रकार जब पति की उम्र बढ़ती है तब लड़कियाँ अपने पतियों का ध्यान रखती हैं और बाद में जब लड़कियाँ बूढ़ी हो जाती हैं तो उनके पति उनका ध्यान रखते हैं।
- बोंडा जनजाति में महिलाओं की संख्या पुरुषों की तुलना में काफी अधिक है।

F.6. सिद्दी जनजाति

(SIDDI Tribe)

- सिद्दी जिन्हें शीडी, हब्शी या मकरानी के रूप में भी जाना जाता है, भारत और पाकिस्तान में रहने वाला एक नृजातीय समूह है।
- वे उत्तर-पूर्व और पूर्वी अफ्रीका में रहने वाले अफ्रीकियों के वंशज हैं, जो दास, सैनिक या नौकर के रूप में भारत लाए गए थे।
- विस्तार: भारत में कर्नाटक, गुजरात और हैदराबाद और पाकिस्तान में मकरान तथा करांची इनकी जनसंख्या के मुख्य केन्द्र माने जाते हैं।
- वर्तमान अनुमानित जनसंख्या: 20,000-55,000
- धर्म: सिद्दी मुख्य रूप से सूफी मुसलमान हैं, हालांकि इनमें से कुछ हिंदू और रोमन कैथोलिक ईसाई भी हैं।
- गुजरात में रहने वाले सिद्दी, गिर वन राष्ट्रीय उद्यान और वन्यजीव अभयारण्य के आस-पास रहते हैं।

VISION IAS

- हालाकि गुजरात में रहने वाले सिद्दियों ने अपने आस-पास में रहने वाली आबादी के कई रीति-रिवाजों को अपनाया है, परंतु उन्होंने कुछ अफ्रीकी परंपराओं को भी संरक्षित रखा है। इनमें गोमा संगीत और नृत्य शैली, जिसे कभी कभी धमाल भी कहा जाता है, शामिल हैं।

F.7. जारवा जनजाति

(Jarawa Tribe)

- अंडमान द्वीप समूह की जनजातियों - जारवा, ग्रेट अंडमानी, ओन्गे और सेंटीनली का निवास अंडमान निकोबार द्वीप समूह में पिछले 55000 वर्षों से माना जाता है।
- धरती पर सबसे एकाकी मानी जाने वाली जारवा जनजाति मुख्यतः शिकार पर निर्भर रहती है। यह जनजाति अंडमान के घने जंगलों में बाहरी दुनिया से पूरी तरह से विलगित रहती है।
- हालांकि, बाहरी लोगों की बढ़ते अंतर्प्रवाह के कारण जारवा विलुप्ति के खतरे का सामना कर रहे हैं।वर्तमान में, जनजाति के लगभग 400 सदस्य 40-50 के समूह में चाढ्ढा (chaddhas), जो उनका निवास स्थान को कहते हैं में रहते हैं।
- इन्हें अनुसूचित जनजाति श्रेणी में रखा गया हैं।
- जारवा द्वारा वचाही (vachahi) और हाथो (hatho) वृक्ष की पत्तियाँ गर्भ निरोधक के रूप में प्रयोग की जाती हैं।
- चलवासी जीवनयापन के दौरान इस जनजाति के द्वारा श्रम-विभाजन का विशिष्ट सिद्धांत अपनाया जाता है, जहां पुरुष सदस्य शिकार को ढूँढते और उसका शिकार करते हैं वहीं महिला सदस्य खाद्य और अन्य आवश्यक वस्तुओं को अपने साथ ढोने का कार्य करती हैं।
- जारवा स्त्री -पुरुष पुर्णतः नग्न रहते हैं यद्यपि उनके द्वारा कुछ आभूषण पहने जाते है किन्तु इसका उद्देश्य अपनी नग्नता को छुपाना नही होता है ।
- इस जनजाति के लोगों में प्रायः विवाह किशोरावस्था में ही संपन्न हो जाता है किन्तु जारवा समुदाय के अंतर्गत विधुर या विधवा विवाह की स्वीकृति है यद्यपि जारवा जनजाति में एक पत्नीक प्रथा की परंपरा कठोरता से मान्य की गयी है, द्वितीय विवाह भी सामान्य रूप से प्रचलन में दिखायी पड़ता है।

G. मूर्तिकला और वास्तुकला

(Sculpture and Architencture)

G.1. वडक्कुन्नाथन मंदिर

(Vadakkunnathan Temple)

- केरल के श्री वडक्कुन्नाथन मन्दिर को सांस्कृतिक विरासत संरक्षण के लिए इस वर्ष के यूनेस्को एशिया-प्रशांत पुरस्कार में उत्कृष्टता पुरस्कार प्राप्त हुआ है।
- यह पुरस्कार इस पवित्र स्थल पर हुए संरक्षण के उल्लेखनीय प्रयास के लिए दिया गया था जिसमें वास्तु शास्त्र (स्थापत्य एवं निर्माण पर केन्द्रित एक पारंपरिक/प्राचीन भारतीय विज्ञान) से उद्धृत युगों, पुरानी प्रथाओं एवं संरक्षण तकनीकों का इस्तेमाल किया गया है।
- मंदिर के मूर्त गुण अभिन्न रूप से अपनी अमूर्त विरासत से जुड़े हैं जो कई पीढ़ियों पुरानी हैं, जो यह सुनिश्चित करता है कि "स्थल की आत्मा /भावना " सम्पूर्ण स्थल में अनुनादित होती है
- यह त्रिशूर जिले में स्थित है और वास्तुकला की केरल शैली का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।
- मंदिर में महाभारत के कुछ विषय एवं कला के कुछ अन्य स्वरूपों सहित कई सजावटी भित्ति चित्र विद्यमान हैं।
- यह हर वर्ष अप्रैल-मई में मनाये जाने वाले विश्व प्रसिद्ध पूरम पर्व का आयोजन स्थल है।
- पूरम के अवसर पर होने वाली भव्य आतिशबाजी देखने योग्य होती है।

पार्वती नंदन गणपति मंदिर, पुणे, महाराष्ट्र

- इसका उल्लेख सांस्कृतिक विरासत संरक्षण के लिए यूनेस्को एशिया-प्रशांत पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं की सूची में किया गया है।
- छत्रपति शिवाजी की मां जीजाबाई के द्वारा 17 वीं सदी में इस मंदिर का जीर्णोद्धार कराया गया।
- मंदिर महाराष्ट्र के मुख्य देवता भगवान गणेश को समर्पित है।
- यूनेस्को द्वारा मान्यता प्रदान किये गए इस मंदिर का हाल ही में पुनरोद्धार किया गया है। पुनरोद्धार से पहले मंदिर जीर्ण-शीर्ण अवस्था में था जिसके संरचनात्मक ढांचे को त्वरित रूप से मजबूत किये जाने की आवश्यकता थी। मौसम और प्रतिदिन के उपयोग तथा अन्य कारकों के प्रभावाधीन होने वाले इसके क्षरण को रोकने के लिए आतंरिक ढांचे को सशक्त किये जाने की आवश्यकता थी।
- मंदिर के सभी भागों में अवैज्ञानिक ढंग से और बिना किसी योजना के की जाने वाले अतिरिक्त संरचनाओं के निर्माण ने समस्या को और अधिक गंभीर बना दिया था।
- मंदिर में एक गर्भगृह (आतंरिक भाग) 'मंडप' (बाहरी अहाता), सभामन्ड़प (एकत्रित होने के लिए बना विशाल स्थल), 'शिखर' (छत) और मुख्य प्रवेश द्वार है।

VISION IAS

- **सांस्कृतिक विरासत संरक्षण कार्यक्रम के लिए यूनेस्को एशिया-प्रशांत पुरस्कार** निजी व्यक्तियों और संगठनों जिनके द्वारा क्षेत्र में संरचनाओं और सांस्कृतिक विरासतों से संबद्ध भवनों के पुनरोद्धार और संरक्षण का कार्य सफलतापूर्वक संपन्न किया गया है, के प्रयासों को मान्यता प्रदान करता है।
- वैयक्तिक प्रयासों को मान्यता प्रदान करने वाला यह पुरस्कार अन्य संपत्ति मालिकों को सांस्कृतिक विरासतों के संरक्षण के लिए अपने समुदाय के भीतर या तो स्वतंत्र रूप से या सार्वजनिक-निजी भागीदारी के माध्यम से संरक्षण परियोजनाओं को शुरू करने के लिए, प्रोत्साहित करने के उद्देश्य को पूरा करना चाहता है।

G.2. मुजीरिस विरासत परियोजना

(Muziris Heritage Project)

- राष्ट्रपति द्वारा मुजीरिस विरासत परियोजना का उद्घाटन किया गया जोकि केरल सरकार के पर्यटन विभाग द्वारा, पर्यटन मंत्रालय भारत सरकार के समर्थन से कार्यान्वित किया जा रहा है,
- मुजीरिस विरासत परियोजना जोकि छह वर्ष पहले शुरू की गई थी, एक महत्वाकांक्षी परियोजना है जिसमें चेन्नामंगलम महलों, चेरामन परंबु, उत्तर परावूर के यहूदी उपासनागृह और बंदरगाह/ तटीय नगर भाग, गोथुरुथु स्थित प्रदर्शन केंद्र, पल्लीपुरम के एक संग्रहालय, आदि के विकास के कार्यों को शामिल किया गया है।
- इस परियोजना में ऐसे पुरातात्विक स्मारकों के संरक्षण की परिकल्पना भी की गई है जोकि त्रिशूर और एर्नाकुलम जिलों के आस-पास 125 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैले हुए हैं।
- मुजीरिस केरल के पश्चिमी समुद्री तट पर प्राचीन काल का बड़ा बंदरगाह था, जिससे मसालों से लेकर कीमती पत्थरों तक सभी वस्तुओं का व्यापार किया जाता था।
- मुजीरिस संस्कृतियों, धर्मों और जातियों के लिए भारत में एक द्वार था। सागर व्यापारियों के बड़े जहाज, जिनमें अरब, मिस्र, यूनानी, रोमन और चीनी भी शामिल थे, अक्सर दुनिया भर से यहां दौरा किया करते थे।
- यह माना जाता है कि एक विनाशकारी बाढ़ जिसने पेरियार नदी की दिशा बदल दी या 14 वीं सदी में एक भूकंप मुजीरिस के पतन का कारण हो सकते हैं।
- परियोजना का अगला चरण 'मसाला मार्ग पहल'(Spice Route Initiative)' है, जो ऐसे अंतरराष्ट्रीय संबंध और संपर्कों की खोज करेगा जोकि पूर्व में मालाबार तट का दुनिया के अनेक हिस्सों के साथ था।
- इस चरण को यूनेस्को और संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन के सहयोग से लागू किया जाएगा। केरल पर्यटन ने 'विरासत और संस्कृति' में वर्ष 2015 का पैसिफिक एशिया ट्रैवेल एसोसिएशन (PATA) पुरस्कार जीता है।

VISION IAS

G.3. चेरामन जुमा मस्जिद

(Cheraman Juma Masjid)

- केरल के त्रिशूर जिले में अवस्थित चेरामन जुमा मस्जिद भारत में अरब व्यापारियों द्वारा 629 ईसवी में निर्मित प्रथम मस्जिद है।
- यह भारत और अरब के बीच प्राचीन काल से सक्रिय व्यापारिक संबंधों का प्रतीक है।
- मस्जिद में एक प्राचीन दीपक है जो सदैव प्रज्वलित रहता है। सभी धर्मों के अनुयायी इस दीप के लिए चढ़ावे के रूप में तेल लाते हैं।
- संख्या में निरंतर बढ़ते हुए आगंतुकों के समायोजन हेतु मस्जिद का कई बार निर्माण किया गया।

सुर्ख़ियों में क्यों?

- प्रधानमंत्री मोदी ने सऊदी अरब के सुल्तान सलमान बिन अब्दुलाज़िज़ अल सउद (Salman bin Abdulaziz Al Saud) को चेरामन जुमा मस्जिद की एक गोल्ड-प्लेटेड प्रतिकृति भेंट की।

- यह मान्यता है कि यह मस्जिद चेरामन पेरुमल (एक चेर राजा जो अरब गया था तथा मक्का में पैगम्बर मोहम्मद से मुलाकात के बाद ईस्लाम ग्रहण कर लिया था) के समकालीन मलिक बिन दिनार द्वारा निर्मित की गई थी।

G.4. पुरातन वस्तुओं के प्रति उदासीनता

(Apathy Towards Antiquities)

पुरातन वस्तुओं से संबद्ध मुद्दे

- विद्यमान और चोरी की गयी कलाकृतियों के लिए एकीकृत डेटाबेस मौजूद नहीं है।
- चोरी की गयी कलात्मक वस्तुओं के संबंध में पर्याप्त सूचना जुटाना एक दुष्कर कार्य है। उदाहरण के लिए, वर्ष 2010 में संसद में चोरी गयी पुरातन वस्तुओं की कुल संख्या के विषय में पूछे जाने पर सरकार के द्वारा वर्ष 2007 से 2010 के बीच इनकी कुल संख्या 13 बताई गयी जो कि निश्चित रूप से वास्तव में चोरी की गयी पुरातन वस्तुओं की संख्या से बहुत कम है।
- राष्ट्रीय स्तर पर केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो पुरातन वस्तुओं की चोरी से संबंधित मामलों को देखता है, लेकिन ऐसे मामलों में कुशलता पूर्वक कार्य करने हेतु इसके पास पर्याप्त क्षमता नहीं है।
- पुरातन वस्तु और कलात्मक सम्पदा अधिनियम, 1972 के अंतर्गत पुरातन वस्तुओं के अनिवार्य पंजीकरण का प्रावधान है। किन्तु इस प्रक्रिया के जटिल होने के कारण बहुत कम वस्तुओं का पंजीकरण हो पाया है।
- 2007 में, संस्कृति मंत्रालय के द्वारा राष्ट्रीय स्मारक तथा पुरावशेष मिशन का शुभारंभ किया गया। मिशन का उद्देश्य 70,00,000 पुरातन वस्तुओं का प्रलेखीकरण करना था। किन्तु 2014 तक, केवल 8,00,000 पुरातन वस्तुओं का प्रलेखीकरण संपन्न हो पाया था।

VISION IAS

- इस संबंध में की गयी लेखा परीक्षा के द्वारा दिल्ली सहित देश के अनेक राष्ट्रीय संग्रहालयों में पुरातन वस्तुओं की बताई गयी संख्या और उनकी उपलब्ध संख्या में विसंगति के बारे में गंभीर चिंता जताई गयी है।

G.5. कलाकृतियों की तस्करी

(Smuggling of artefacts)

- भारत तस्करी से सर्वाधिक प्रभावित देशों में से एक है और तस्करों का एक प्रमुख निशाना है, जो कला के खरीददारों और संग्रहालयों को बेचने के लिए चोरी की गई प्राचीन वस्तुओं और अन्य सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण कलाकृतियों को गैर कानूनी ढंग से विदेश भेजते हैं।
- मथुरा से सम्बंधित बैठे हुए बुद्ध की पाषाण मूर्ति,11वीं -12 वीं शताब्दी के चोल युग से जुड़ी नृत्यरत शिव की नटराज मूर्ति, 10 वीं सदी की अर्धनारीश्वर मूर्तियाँ ऑस्ट्रेलिया ने भारत को वापस की हैं।
- जर्मन सरकार ने कश्मीर से गायब हुई 10 वीं शताब्दी की दुर्गा की मूर्ति भारत को वापस लौटाई।

अर्धनारीश्वर

- यह मूर्ति उभयलिंगी स्वरुप में है। मध्य में से विभाजित इस मूर्ति के दायें अर्ध भाग में शिव तथा बाएं अर्ध भाग में पार्वती हैं।
- पौराणिक कथाओं के अनुसार शिव का यह रूप तब अस्तित्व में आया जब पार्वती (शक्ति के रूप में) के कठोर तप से प्रसन्न शिव ने उन्हें स्वयं का अंश बनने का वरदान दिया।
- इस रूप में शिव की पूजा का सार यह है कि यदि व्यक्ति के आंतरिक स्तर पर उसके अन्दर के स्त्रीत्व एवं पुरूषत्व का मिलन हो जाए तो वह शाश्वत परमानंद की अवस्था में रहेगा।
- एलिफेंटा में अर्धनारीश्वर की विख्यात प्रतिमा शिव के इस रूप का उत्कृष्ट निरूपण/उदाहरण है।

G.6. बोध गया-आध्यात्मिक राजधानी

(Bodh Gaya – Spiritual Capital)

- भारत सरकार ने भारत तथा शेष विश्व के बौद्धों को साझी सभ्यता के सूत्र में बाँधने के उद्देश्य से बोधगया को एक आध्यात्मिक राजधानी के रूप में विकसित करने का निर्णय लिया है।
- बोधगया सम्पूर्ण विश्व में बौद्ध धर्म का पवित्रतम स्थल है।
- निरंजना नदी (वर्तमान में फल्गु नदी) के तट पर स्थित यह स्थल बुद्ध के समय में उरुवेला नाम से जाना जाता था।
- बोधगया का मुख्य बौद्ध मठ बोधिमंड-विहार (पाली में) के नाम से जाना जाता था। अब यह महाबोधि मंदिर के नाम से जाना जाता है।

VISION IAS

बोधगया

- यहीं पर एक वट वृक्ष, जिसे बोधि वृक्ष कहा जाता है, के नीचे गौतम ज्ञान प्राप्त करके बुद्ध (जिसे बोध हो चुका हो) कहलाये।
- यह मंदिर कई शताब्दियों, संस्कृतियों और धरोहरों का एक वास्तु शिल्पीय मेल है।
- इसकी वास्तुकला गुप्त युग का एक विशिष्ट प्रतीक है, एवं इसमें आगे की शताब्दियों के शिलालेख भी हैं जिनमें 7 वीं से 10 वीं शताब्दियों के बीच श्रीलंका, चीन व म्यांमार से आने वाले यात्रियों का विवरण दिया गया है।
- बोधगया में लगभग सभी प्रमुख बौद्ध देशों के मठ हैं।

G.7. अमरावती:आन्ध्र प्रदेश की नयी राजधानी

(Amravati: New Capital of Andhra Pradesh)

- अमरावती को आंध्र प्रदेश की आगामी राजधानी के रूप में अनुमोदित किया गया है।
- कृष्णा नदी के तट पर अवस्थित यह नगर प्राचीन काल में सातवाहन शासकों के साम्राज्य की राजधानी थी।
- आंध्र प्रदेश मंत्रिमंडल ने सिंगापुर सरकार द्वारा तैयार किए गए मास्टर प्लान के पहले चरण को स्वीकृति भी दे दी है।
- भगवान अमरेश्वर के मंदिर के नाम पर इस शहर का अमरावती का नाम रखा गया था। इसे 'दक्षिण की काशी' भी कहा जाता है। बौद्ध धर्म में भी इस शहर की महत्ता है।
- आंध्र मूर्ति कला सामान्यतः अमरावती शैली के नाम से ही जानी जाती है। अमरावती में स्तूप एक विशेष प्रकार के सफेद हरे संगमरमर के बने थे।

G.8. भारत के सर्वोत्कृष्ट वास्तुकार: चार्ल्स कोरिया

(India's Greatest Architect Charles Correa)

- 'भारत के महानतम वास्तुकार' के रूप में विख्यात चार्ल्स कोरिया का हाल ही में निधन हो गया।
- वे नवी मुंबई के मुख्य वास्तुकार थे। नवी मुंबई को दुनिया के सबसे बड़े शहरी स्थानों में माना जाता है, जहाँ 20 लाख से अधिक लोगों का आवास है।
- उन्होंने शहरी विकास एवं वहनीय आवास के क्षेत्र में कुछ अद्वितीय अवधारणाओं का प्रतिपादन किया जिन्हें यदि व्यापक तौर पर अपनाया गया होता तो न केवल भारत बल्कि तीसरी दुनिया के निर्धनतम कस्बों का परिदृश्य बदला जा सकता था।
- चार्ल्स कोरिया ने ही मुंबई में 1984 में शहरी डिजाइन अनुसंधान संस्थान (Urban Design Research Institute) की स्थापना की थी।
- भारत में श्री कोरिया, गांधी स्मारक(अहमदाबाद), कला केन्द्र (गोवा), राष्ट्रीय शिल्प संग्रहालय (नई दिल्ली), भारत भवन (भोपाल) और जवाहर कला केंद्र (जयपुर) आदि की वास्तुकारी के लिए प्रसिद्ध हैं।
- इन्हें पद्मश्री (1972) एवं पद्म विभूषण पुरस्कार(2006) से भी सम्मानित किया गया है।

G.9. तारा भगवती - बौद्ध शिलालेख

(Tara Bhagavati - Buddhist inscription)

- 12 वीं सदी का एक शिलालेख कर्नाटक के गडग जिले से प्राप्त हुआ।
- यह शिलालेख होयसल राजा वीर बल्लाल द्वितीय के शासन काल(1173 -1220 ईस्वी) का माना जा सकता है।
- यह उन मुट्ठी भर शिलालेखों में से है जो बौद्ध धर्म में वज्रयान के तारा भगवती पंथ (जो यहाँ 12 वीं शताब्दी तक लोकप्रिय रहा) को विशेष रूप से संदर्भित करता है।
- यह शिलालेख राज्य के इस हिस्से में बौद्ध धर्म के अस्तित्व और लोकप्रियता की पुष्टि करता है।
- केरल में कोडनगल्लूर प्राचीनतम भगवती मंदिरों में से एक माना जाता है।

तारा भगवती

- तारा भगवती एक बौद्ध देवी हैं।
- तारा बौद्ध धर्म के अंतर्गत हिन्दू मान्यताओं में प्रचलित देवी काली का प्रतिरूप हैं।
- भगवती संप्रदाय बौद्ध धर्म के की वज्रयान शाखा का ही एक अंग है।
- दक्षिण भारत में बौद्ध धर्म के पतन के पश्चात अत्यधिक मात्रसत्तात्मक तत्वों के प्रभावाधीन यह सम्प्रदाय हिन्दू धर्म में प्रचलित शाक्त और तांत्रिक परम्पराओं का अंग बन गया।

VISION IAS

G.10. प्राचीन ताम्र-पत्र पर उत्कीर्ण विषयवस्तु की व्याख्या

(Decoding of text on an ancient Copper Plate)

सुर्खियों में क्यों?

दक्षिण एशिया की पांडुलिपियों और दुर्लभ ग्रंथों के सबसे बड़े संग्रह-स्थल, भंडारकर ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट (BORI), के शोधकर्ताओं ने एक ताम्र-पत्र की व्याख्या की है।

ताम्र-पत्र से प्राप्त निष्कर्ष

- चालुक्य राजा पुलकेशिन द्वितीय के हाथों सम्राट हर्षवर्धन के पराजित होने का काल 618 ईस्वी निर्धारित किया गया है।
- पहले यह माना जाता था कि यह लड़ाई 612 ईसवी से 634 ईसवी के बीच किसी समय हुई थी।
- ताम्रपत्र 610-611 ईसवी में पुलकेशिन द्वितीय के राज्याभिषेक का विवरण निर्णित करने में भी उपयोगी है।

हर्षवर्धन और पुलकेशिन द्वितीय के बीच युद्ध

- यह युद्ध नर्मदा के तट पर हुआ था।
- चालुक्य राजधानी बादामी के राजा पुलकेशिन ने हर्ष के विजय अभियान को चुनौती दी।
- हर्ष दक्षिण में एक शक्तिशाली प्रतिद्वंद्वी के अस्तित्व को बर्दाश्त करने को तैयार नहीं था, वह एक बड़ी सेना के साथ कन्नौज से निकल पड़ा।

- वस्तुतः पुलकेशिन द्वितीय द्वारा नर्मदा नदी के दर्रों की सुरक्षा इतने कुशल तरीके से की गई थी कि हर्ष नदी को सीमा रेखा के रूप में स्वीकार करने के लिए विवश हो गया और अत्यधिक संख्या में अपने हाथियों के सेना को खोने के बाद युद्ध के मैदान से वापस लौट गया।.

G.11. चन्देस्वरर की चोल मूर्तिकला

(Chola Sculpture of Chandesvarar)

- 10वीं सदी ईसवी की मानी जाने वाली चंदेस्वरर की एक मूर्ति तमिलनाडु के त्रिची में उम्मैयलपूरम के निकट सुंडईक्कई गांव में प्राप्त हुई है।

मूर्तिकला का विवरण:

- इस मूर्ति के सिर के बालों को 'जटाभरा' (एक प्रकार का हेयर स्टाइल, जिसे शिव धारण करते थे) के रूप में व्यवस्थित किया गया है, जिसे सामान्यतः वृहत संख्या में चोटियों के झुण्ड के रूप में धारण किया गया है।
- कूल्हे की पोषाक छोटी और लहराती हुई अवस्था में है, जो कमर के चारों ओर एक अच्छी तरह से लिपटी हुई वस्त्रों से सुरक्षित है, जिसे 'इडाक्कात्तु' (idaikkattu) कहा जाता है।
- यह मूर्ति 'सुहासन' (suhasana) की मुद्रा में है, जहाँ एक पैर मुड़ा हुआ और आसन पर टिका हुआ है, जबकि दूसरा पैर मूर्तितल पर है।
- इस मूर्ति को एक पवित्र धागे, पेट पर एक बैंड तथा थोड़े से आभूषणों से सजाया गया है।

चन्देस्वरर के बारे में

- चन्देस्वरर शैव संप्रदाय के 63 नयनार संतों में से एक हैं और इन्हें मंदिरों में सबसे पहले जगह मिली थी।

- इन्हें इष्टदेव के समक्ष सभी शैव मंदिरों के उत्तरी किनारे पर एक अलग मंदिर में स्थापित किया गया है।
- चन्देस्वरर का सबसे प्रतिष्ठित मंदिर तंजावुर के राजराजेस्वरम में राजराजा प्रथम द्वारा बनवाया गया था।

नयनार:

- 7वीं से 9वीं सदी के दौरान, दक्षिण भारत में नयनार (शिव को समर्पित संत) और अलवार (विष्णु को समर्पित संत) संतों (जो "अछूत" माने जाने वाली जातियों सहित सभी जातियों से संबंधित थे) के नेतृत्व मे नए धार्मिक आंदोलन देखने को मिलते हैं।
- वे बौद्ध और जैन सम्प्रदायों की आलोचना किया करते थे तथा मोक्ष के मार्ग के रूप में शिव या विष्णु की आराधना/भक्ति का प्रचार करते थे।
- उन्होंने संगम साहित्य में प्रदर्शित प्यार और वीरता के आदर्शों से सीख लिया तथा उन्हें भक्ति के मूल्यों के साथ मिश्रित किया।
- नयनारों की कुल संख्या 63 थी, तथा वे विभिन्न जातिगत पृष्ठभूमि से ताल्लुक रखते थे, जैसे- कुम्हार, अछूत, मजदूर, किसान, शिकारी, सैनिक, ब्राह्मण और प्रमुख।
- उनमें से अप्पार, संबंदर, सुन्दरर और मानिक्कावसगर सर्वाधिक लोकप्रिय थे ।
- उनके गीतों के संकलन के दो संग्रह/खंड हैं – तेवरम और तिरुवाककम।

VISION IAS

H. घटनाएं एवं पर्व

(Events And Festivals)

H.1. जल्लीकट्टू

(Jallikattu)

सुर्ख़ियों में क्यों?

- हाल ही में सरकार ने जल्लीकट्टू पर लगा प्रतिबंध हटा दिया था। अब उच्चतम न्यायलय ने सरकार के इस फैसले पर रोक लगा दी है। जल्लीकट्टू एक पारंपरिक खेल है जिसमें सांडों की लड़ाई होती है, यह तमिलनाडु में सदियों से लोकप्रिय है।

जल्लीकट्टू क्या है?

- जल्लीकट्टू एक bull-vaulting (बैलो के ऊपर से छलांग लगाना) आयोजन है जोकि तमिलनाडु में पोंगल समारोह के तहत मट्टू पोंगल के दिन मनाया जाता है।
- प्रतिभागी सांड को उसके कूबड़ से पकड़ते हैं और उस पर तब तक लटके रहने का प्रयत्न करते हैं जब तक कि सांड समापन रेखा पार न कर ले।
- जल्लीकट्टू मदुरै, तिरुचिरापल्ली, थेनी, पुदुक्कोट्टई और डिंडीगुल जिलों में लोकप्रिय है। इन क्षेत्रों को जल्लीकट्टू बेल्ट के रूप में भी जाना जाता है।
- जल्लीकट्टू एक प्राचीन खेल है। सिंधु घाटी सभ्यता की मोहरों में भी इसे दर्शाया गया है। इसके अलावा संगम साहित्य (ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी से दूसरी शताब्दी) में भी ईरु थाज़ूवुथल (Eru Thazhuvuthal) (बैलों को गले लगाना) के कई विस्तृत उल्लेख मिलते हैं।

H.2. ओणम महोत्सव

(Onam Festival)

- यह त्यौहार मलियाली माह चिंगम (अगस्त-सितंबर) के दौरान आता है। यह केरल के कृषि अतीत की याद ताजा करता है और इसे एक शस्योत्सव (फसल की कटाई का उत्सव) माना जाता है। यह केरल का राजकीय त्यौहार भी है।
- महोत्सव को मनाने का कारण - यह त्यौहार भगवान विष्णु के वामन अवतार और पौराणिक राजा बलि की घर वापसी और उनके समृद्ध शासन की स्मृति में मनाया जाता है।
- समारोह ओणम पूक्कलम के साथ शुरू होता है, जिसमें जल्दी सुबह फर्श पर पुष्प बिछाए जाते हैं।
- राज्य भर के मंदिरों में पूजा की जाती है; सबरी माला, गुरुवयूर और थ्रिक्काकरा के पहाड़ी मंदिरों में भी पूजा की जाती है, जिन्हें राजा महाबली की राजधानी माना जाता है।
- चावल के साथ केले के पत्ते पर पारंपरिक मिठाई “ओणम सद्य” परोसी जाती है। “पायसम” मिठाई के साथ विभिन्न प्रकार की करी भी होती है।
- वल्लमकली केरल में एक पारंपरिक नाव दौड़ है। यह डोंगी दौड़ का एक रूप है और इसमें पतवार वाली युद्ध डोंगियों का उपयोग किया जाता है। यह मुख्य रूप से ओणम के दौरान आयोजित की जाती है।

VISION IAS

H.3. वान्गाला महोत्सव मेघालय

(Wangala festival Meghalaya)

- यह गारो जनजाति का फसल की कटाई के बाद का त्यौहार है। यह नवंबर में जबकि कृषि वर्ष की समाप्ति हो रही होती हैं, में आयोजित होता है।
- इसे सौ ढोलों का महोत्सव भी कहा जाता है।
- इसके माध्यम से उर्वरता के देवता सूर्य देव को धन्यवाद दिया जाता है; स्थानीय भाषा में इसे मिसी -ए-गिल्पा-सल्जोंग-गलापा (Misi-A-Gilpa-Saljong-Galapa) कहा जाता है।
- समारोह की शुरूआत में एक नगाड़ा, जो एक विशेष प्रकार का ढोल होता हैं, बजाया जाता है।
- पुरुष और महिला ढोल, भैंस के सींग की तुरहियों और बांस की बांसुरी के साथ नृत्य करते हैं।
- पुरुष धोती, आधे आस्तीन का जैकेट और पंख लगी पगड़ी पहनते हैं। महिलायें रेशम से बने रंगीन कपड़े, ब्लाउज और सिर पर पंख लगा एक कपड़ा लपेटती हैं।

H.4. बतुकम्मा महोत्सव

(Bathukamma festival)

- बतुकम्मा नवरात्रि के दौरान नौ दिनों के लिए मनाया जाता है। यह महालया अमावस्या के दिन शुरू होता है और दशहरा से दो दिन पहले दुर्गाष्टमी पर “सद्दुला बतुकम्मा” त्यौहार पर समाप्त होता है।
- बतुकम्मा फूलों का एक सुंदर ढेर होता है, जिसे सात संकेंद्रित परतों में विभिन्न अनोखे मौसमी फूलों से मंदिर के गोपुरम के आकार में सजाया जाता है। उनमें से ज्यादातर फूल औषधीय गुण वाले होते हैं।
- तेलुगु भाषा में ‘बतुक’ का मतलब जीवन होता है और ‘अम्मा’ का मतलब मां होता है; 'बतुकम्मा' का अर्थ है 'देवी माँ का जागना'
- 'जीवन दायित्री' देवी महागौरी को 'बतुकम्मा' के रूप में पूजा जाता है
- नौ दिनों तक, रोज़ शाम को, महिलायें और विशेष रूप से बालिकाएं, अपनी अपनी 'बतुकम्मा' के साथ अपने इलाके के खुले क्षेत्रों में इकट्ठा होती हैं। वे 'बतुकम्मा' के चारों ओर एक गोले में लोक गीत गाते हुए, ताली बजाकर चारों ओर घूमती हैं।

H.5. नव वर्ष महोत्सव

(New Year Festivals)

- **उगादि** को कर्नाटक और आंध्र प्रदेश में नव वर्ष दिवस के रूप में मनाया जाता है। **उगादि** नाम "युग आदि" से लिया गया है, जिसका अर्थ है 'एक नए युग की शुरुआत'। यह हिंदू माह चैत्र के पहले दिन मनाया जाता है, जो वसंत ऋतु की शुरुआत बताता है।

VISION IAS

- **गुड़ी पड़वा** को महाराष्ट्र में नव वर्ष दिवस के रूप में मनाया जाता है। यह उगादि वाले दिन ही मनाया जाता है, अर्थात माह चैत्र के पहले दिन। इस दिन भगवान ब्रह्मा की पूजा की जाती है और ब्रह्मा की पताका **'गुड़ी'** को हर घर में फहराया जाता है। इसे ब्रह्मध्वज भी कहा जाता है और यह रावण पर राम की विजय का प्रतीक है।
- **विशु** त्यौहार केरल में नव वर्ष दिवस के रूप में मनाया जाता है। यह मलयालम महीने मेदम (मध्य अप्रैल) के पहले दिन मनाया जाता है।

H.6. लोसर महोत्सव लद्दाख

(Losar festival ladakh)

- लोसर त्यौहार लद्दाख / तिब्बत में नववर्ष की शुरुआत के रूप में मनाया जाता है और यह इस क्षेत्र का सबसे महत्वपूर्ण त्यौहार है।
- यह दिसंबर में आता है और लद्दाखी बौद्धजन घरेलू धार्मिक स्थलों में या गोम्पा में अपने देवताओं से समक्ष धार्मिक चढ़ावा चढ़ाते हैं।
- इस महोत्सव के दौरान पारंपरिक प्रदर्शन, सांस्कृतिक कार्यक्रम और प्राचीन रस्मों का प्रदर्शन किया जाता है।
- तेज़ संगीत और नृत्य के साथ और रिश्तेदारों के साथ भोजन करके उत्सव मनाया जाता है।

H.7. सजिबू चेइरावबा समारोह मणिपुर

(SAJIBU CHEIRAOBA Festival Manipur)

- यह मणिपुरियों का नववर्ष है और मणिपुरी महीने – सजिबू - के पहले दिन मनाया जाता है। सजिबू मार्च या अप्रैल के महीने में आता है।
- समारोह से पहले मणिपुरी लोग अपने घरों की सफाई करते हैं और घरों और अन्य परिसर को सजाते हैं।
- इस दौरान मेइती देवताओं की पूजा की जाती है। उन्हें फूल, फल और व्यंजन चढ़ाये जाते हैं। पूरा परिवार पारंपरिक रूप से साथ में भोजन करता है और उसके बाद वे दोपहर में पास की छोटी पहाड़ियों (Hillocks) पर चढ़ते हैं।
- इस अवसर पर विवाहित महिलायें अपने माता-पिता और भाइयों को उपहार देती हैं।

H.8. मिजो के चप्चार कुट

(Chapchar Kut of the Mizos)

- चप्चार कुट का शाब्दिक अर्थ है – वह त्यौहार जो उस अवधि में मनाया जाता है जब बांस और पेड़ों को काट दिया जाता है और झूम कृषि के लिए उन्हें जलाने के लिए सूखने का इंतज़ार रहता है।
- यह झूम कटाई का अंत बताता है और दर्शाता है कि खेत बुवाई के लिए तैयार है। यह महोत्सव मार्च माह में 3 से 7 दिनों तक मनाया जाता है।

VISION IAS

 ©Vision IAS

- चप्चार कुट त्यौहार 1450 -1600 ईसवी के बीच शुरू हुआ था।
- महोत्सव में पारंपरिक पोशाक की परेड होती है और समूहों द्वारा चेराव, चाय, छेइलम, सर्लाम्कई आदि नृत्य और संगीत के कार्यक्रम होते होते हैं।

H.9. नबाकालेबार महोत्सव

(Nabakalebar festival)

- इस त्यौहार में जगन्नाथ मन्दिर के चार देवताओं की लकड़ी के रूपों की प्रतीकात्मक बनावट की जाती है।
- नबाकालेबार को पुरी के श्री जगन्नाथ मंदिर में एक सामयिक त्यौहार के रूप में मनाया जाता है। **नब** का मतलब नया होता है और **कालेबार** का मतलब शरीर होता है।
- यह जगन्नाथ पंथ में जगन्नाथ, बलभद्र, सुभद्रा और सुदर्शन की लकड़ी के रूपों का एक आवधिक नवीकरण है।
- आत्मा या ब्रह्म एक उच्च तकनीकी और गुप्त विधि से पुरानी मूर्तियों से नए शरीर में प्रवेश करती है।
- नबाकालेबार त्यौहार 12 से 19 वर्ष के अंतराल से मनाया जाता है।
- इस त्यौहार के दौरान वार्षिक रथयात्रा नबाकालेबार रथ यात्रा हो जाती है।

H.10. रम्मन

(RAMMAN)

- उत्तराखंड का रम्मन त्यौहार 'रामायण' पर आधारित है और इसकी झांकी नरसिंह देव भगवान पर आधारित होती है।
- इस त्यौहार को यूनेस्को द्वारा 2009 में विश्व विरासत घोषित किया गया है।
- झांकी में हिमालय और भूमयाल भगवान का मंदिर दर्शाया जाता है और झांकी के मध्य में कलाकार उत्तराखंड का लोक संगीत यंत्र **भंकोर** बजाते हैं।
- रात में भूमयाल भगवान के मंदिर में मुखौटा पहन कर नृत्य किया जाता है। यह मुखौटे विभिन्न महाकाव्य, ऐतिहासिक और कल्पनाशील पात्रों के होते हैं। मुखौटे दो प्रकार के होते हैं – "ध्यो पत्तर" और "ख्यालारी पत्तर"।

H.11. अन्य त्योहार जो सुर्खीयों में रहे

(Other festivals in news)

- सिक्किम में बुद्ध जयंती को **सागा दावा** त्यौहार नाम से मनाया जाता है। यहाँ बुद्ध को सागा दावा भी कहा जाता है।
- **नुआखाई** त्यौहार ओडिशा में मनाया जाता है, इसमें चावल की पहली फसल की भेंट देवता को चढ़ाई जाती है। यह गणेश चतुर्थी के एक दिन बाद मनाया जाता है।

VISION IAS

- **नवरोज़** फर्वर्दीन माह का पहला दिन होता है। फर्वर्दीन ईरानी सौर कैलेंडर का पहला माह होता है। पारसी कैलेंडर के फसली/बास्तानी संस्करण में, नवरोज़ हमेशा वसंत विषुव (अधिकतर 21 मार्च) का दिन होता है।
- **सम्मक्का सरक्का जठरा** या **मेदरम जठरा** देश में आदिवासियों का सबसे बड़ा धार्मिक समागम है। यह वर्ष में दो बार देवी के सम्मान में तेलंगाना राज्य में मनाया जाता है।

H.12. उज्जैन में सिंहस्थ कुंभ

(Simhastha Kumbh in Ujjain)

- जब बृहस्पति सिंह राशि में आता है तब उज्जैन में कुम्भ आयोजित होता है और इसीलिए इसे 'सिंहस्थ' कहा जाता है।
- यह चैत्र माह की पूर्णिमा के दिन क्षिप्रा नदी के पावन जल में स्नान के साथ शुरू होता है और वैशाख माह की पूर्णिमा पर अंतिम स्नान तक चलता है। इन तिथियों के बीच कई तिथियों पर स्नान होते हैं।
- कुम्भ मेलों की उत्पत्ति के बारे में सबसे लोकप्रिय किंवदंती समुद्र मंथन की कथा है। इसके अनुसार समुद्र मंथन से निकलने वाले अमृत के लिए देवताओं और राक्षसों में भयंकर युद्ध हुआ था।
- इस दौरान अमृत से भरे कलश पर अधिकार करने की लड़ाई में, अमृत की अमूल्य बूँदें चार स्थानों - हरिद्वार, प्रयाग (इलाहाबाद), नासिक और उज्जैन में गिरी थीं।
- कुंभ मेला, इन चार स्थानों पर हर बारह वर्ष में एक बार आयोजित होता है और इस दौरान लाखों भक्त इन स्थानों पर आते हैं।

H.13. रामलीला पर दूसरा अंतर्राष्ट्रीय सम्मलेन

(Second International Conference on Ramlila)

- संस्कृति मंत्रालय के तहत कार्य करने वाली संस्था, इंदिरा गांधी नेशनल सेंटर फॉर आर्ट्स, द्वारा रामलीला पर दूसरे अंतर्राष्ट्रीय सम्मलेन (सात दिवसीय) का आयोजन किया गया।
- रामलीला पर पहले अंतर्राष्ट्रीय सम्मलेन का आयोजन 2013 में त्रिनिदाद एंड टोबागो में किया गया था।
- भारत की रामलीला परम्परा 2005 में UNESCO के "मानवता की मौखिक एवं अप्रत्यक्ष विरासत की श्रेष्ठ कृति" में शामिल की जा चुकी है।

H.14. भारतविद्या का विश्व सम्मलेन

(World Indology Conference)

- भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् (ICCR) के साथ समन्वय करके राष्ट्रपति भवन ने पहली बार वर्ल्ड इंडोलॉजी सम्मेलन का आयोजन किया।
- विश्व के विभिन्न देशों के इंडोलॉजिस्ट (भारतविदों) ने वरिष्ठ भारतीय विद्वानों के साथ भारतीय संस्कृति और दर्शन के विभिन्न विषयों पर विचार-विमर्श किया।

VISION IAS

- इंडोलॉजी या भारतीय विद्या क्या है?
- यह भारतीय उपमहाद्वीप के इतिहास और संस्कृति, भाषा, साहित्य का अकादमिक अध्ययन है।

- जर्मनी के प्रो. स्टेईटेनक्रोन को "विशिष्ठ भारतविद" पुरस्कार से राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी के द्वारा नवाजा गया। इस पुरस्कार के तहत 20,000 अमेरिकी डॉलर और प्रशस्तिपत्र दिया जाता है।

H.15. गंगा संस्कृति यात्रा

(Ganga Sanskriti yatra)

- यह एक उत्सव है जिसका आयोजन फरवरी-मार्च में गंगासागर से गंगोत्री तक किया जाएगा।
- गंगा संस्कृति यात्रा का उद्देश्य गंगा नदी की सांस्कृतिक विविधता और विरासत को प्रदर्शित करने के साथ-साथ गंगा नदी को सुरक्षित रखने और पुनर्जीवित करने के प्रति आम लोगों में जागरूकता का संदेश फैलाना है।
- गंगा संस्कृति यात्रा में सांस्कृतिक आदान-प्रदान पर भी ध्यान केंद्रित किया जाएगा। इसके मद्देनजर यात्रा को विभिन्न भागों में बांटा गया है और इसका केंद्र बिंदु वाराणसी होगा।
- यात्रा के दौरान कलात्मक क्रियाकलापों और गंगा की सांस्कृतिक विरासत पर सर्वेक्षण और दस्तावेजों का श्रृंखला के प्रारंभ होने पर विमोचन किया जाएगा।
- समारोह का मुख्य आकर्षण गंगा से जुड़ी विभिन्न कलात्मक क्रियाकलापों का प्रदर्शन होगा। इसके अंतर्गत पारंपरिक गीत, पारंपरिक नृत्य, पारंपरिक रंगमंच, वृत्तचित्र और फिल्मों का प्रदर्शन, नुक्कड़ नाटक, कवि सम्मेलन, फोटो प्रदर्शनी, फिल्म प्रदर्शन, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताएं, संगोष्ठी और पोस्टर अभियानों का आयोजन किया जाएगा।

H.16. कामागाटामारू प्रकरण

(Komagata Maru Incident)

- लगभग एक सदी पहले 23 मई, 1914 को, कामगाटामारू नामक एक मालवाहक जहाज कनाडा के ब्रिटिश कोलंबिया प्रान्त के बुर्राड इनलेट (Burrard Inlet) पर अवस्थित वैंकूवर हार्बर के लिए रवाना हुआ।
- यह पोत गुरदीत सिंह नामक एक सिंगापुर के व्यवसायी द्वारा किराये पर लिया गया था।
- इस पर पंजाब के 376 यात्री सवार थे, जो हांगकांग में जहाज के प्रस्थान के समय अलग-अलग जत्थों में यहाँ आये थे।
- जहाज को कलकत्ता लौटने के लिए मजबूर किया गया और जब यह कलकत्ता पहुंचा तो अंग्रेजों द्वारा 19 यात्रियों की हत्या कर दी गई और कईयों को गिरफ्तार कर लिया गया।
- कनाडा के "लगातार यात्रा विनियमन" (continuous journey regulation) के अंतर्गत यह प्रावधान था कि वैसे आप्रवासी, जो अपने मूल देश से लगातार यात्रा करके सीधे कनाडा नहीं पहुंचते हैं तो उन्हें प्रवेश से वंचित कर दिया जायेगा।
- कनाडाई कानूनों में स्पष्ट रूप से भारतीयों के प्रवेश पर प्रतिबंध नहीं था, तथापि उक्त विनियमन के माध्यम से भारतीयों का उत्प्रवास लगभग असंभव बना दिया गया था क्योंकि सुदूर स्थित कनाडा के लिए भारत से कोई सीधा मार्ग नहीं था। (कोमगाटामारू हांगकांग से आया था।)

VISION IAS

I. सरकार द्वारा की गई पहलें

(Government Initiatives)

I.1. अंडमान जेल में वीर सावरकर की पट्टिका

(Veer Savarkar's plaque at Andaman jail)

- सरकार ने अंडमान निकोबार की प्रसिद्द सेलुलर जेल में, जहाँ विनायक दामोदर सावरकर को अंग्रेजों द्वारा कैद किया गया था, की स्मृति में वहां के स्वतंत्रता सेनानी स्मारक पर उनके नाम की पट्टिका पुनः स्थापित करने का निर्णय लिया है
- सावरकर को ही हिंदुत्व शब्द के प्रतिपादन का श्रेय दिया जाता है
- वह एक स्वतंत्रता सेनानी, समाज सुधारक, लेखक, वक्ता और एक देशभक्त थे, उन्हें स्वातंत्र्यवीर कहा जाता था।
- वह एक भारतीय राष्ट्रवादी थे और साथ ही हिंदू महासभा नामक हिंदू राष्ट्रवादी संगठन और राजनीतिक दल के अग्रणी नेताओं में से एक थे।
- वह लंदन में भारतीय क्रांतिकारियों के साथ भी जुड़े थे।
- सावरकर ने 1905 में भारत में अभिनव भारत (मेजिनी के यंग इटली के समान) नामक अपना गुप्त क्रांतिकारी संगठन आरम्भ किया था।
- इन्होने प्रसिद्ध पुस्तक 'भारत का स्वतंत्रता संग्राम -1857' की रचना की।

I.2. देश के संस्कृति विश्वविद्यालय

(Culture Universities In Country)

- देश में चार ऐसे शिक्षण संस्थान हैं जिन्हें संस्कृति मंत्रालय के अन्तर्गत विश्वविद्यालय (deemed to be universities) घोषित किया गया है, जो निम्न है :

✓ नव नालंदा महाविहार (NNM), नालंदा।

✓ केन्द्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान (CIBS), लेह, लद्दाख, जम्मू-कश्मीर।

✓ राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान, नई दिल्ली।

✓ तिब्बती अध्ययन केन्द्रीय विश्वविद्यालय (CUTS), सारनाथ, वाराणसी, उत्तर प्रदेश।

I.3. रानी गैडिंल्यू की स्वर्ण जयन्ती

(Birth Centenary Of Rani Gaidinliu)

- 2015 में भारत सरकार ने रानी गैडिंल्यू की 100 वीं जयंती के उपलक्ष्य में 100 और 5 रुपए मूल्य के सिक्के जारी किए।
- रानी गैडिंल्यू मणिपुर से भारत की पहली महिला स्वतंत्रता सेनानी थीं।
- वह हेराका धार्मिक आन्दोलन की एक राजनीतिक और आध्यात्मिक नेता थीं।
- हेराका आन्दोलन सविनय अवज्ञा आन्दोलन से प्रभावित था।

VISION IAS

- सशस्त्र प्रतिरोध के माध्यम से, उन्होंने शीघ्र ही एक धार्मिक-स्वदेशी विद्रोह को एक क्रांतिकारी आंदोलन में रूपांतरित कर दिया।
- उनका राजनीतिक संघर्ष सत्याग्रह, अहिंसा, आत्मनिर्भरता के गांधीवादी सिद्धांतों पर आधारित था।
- उन्होंने मणिपुर क्षेत्र में गांधी जी के संदेश के प्रसार द्वारा भारत के व्यापक स्वतंत्रता आंदोलन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।
- 1932 में 16 वर्ष की उम्र में में उन्हें गिरफ्तार कर ब्रिटिश भारत सरकार द्वारा आजीवन कारावास की सजा सुनाई थी।
- **रानी उपाधि:** 1937 में पंडित जवाहर लाल नेहरू ने उनसे शिलांग जेल में मुलाकात की और उनकी रिहाई की बात को आगे बढ़ाने का वचन दिया।इस दौरान नेहरु ने उन्हें रानी की उपाधि दी और तदुपरांत रानी गैन्दिल्यु के नाम से उन्होंने स्थानीय लोकप्रियता हासिल की।
- 1947 में भारत की आजादी के बाद उन्हें जेल से रिहा कर दिया गया और मृत्युपर्यंत वह लोगों के उत्थान के लिए कार्य करती रहीं।

I.4. पंडित दीन दयाल उपाध्याय की स्वर्ण जयन्ती

(Birth Centenary of Pandit Deen Dayal Upadhyay)

- सरकार ने भारतीय जनता पार्टी के अग्रवर्ती भारतीय जनसंघ के नेता पंडित दीनदयाल उपाध्याय के जन्म शताब्दी समारोह के लिए 100 करोड़ रुपए का आवंटन किया है।
- उन्हें अपने 'एकात्म मानव वाद दर्शन' (एकात्म मानव वाद का दर्शन) के लिए सर्वाधिक जाना जाता है।
- उन्होंने 'स्वदेश' नामक एक दैनिक,'पाञ्चजन्य' नामक एक पाक्षिक तथा 'राष्ट्र धर्म' नाम से एक मासिक पत्रिका आरम्भ की थी।
- उनका एकात्म मानव वाद दर्शन व्यक्तिगत एवं सामूहिक तथा भौतिक एवं आध्यात्मिक का एक संश्लेषण है।
- गाँवों को आधार बनाते हुए उन्होंने भारत के लिए एक विकेंद्रीकृत राजव्यवस्था और आत्म निर्भर अर्थव्यवस्था की कल्पना की।
- वह अन्त्योदय अर्थात समाज के अंतिम व्यक्ति की सेवा में विश्वास करते थे।

I.5. तात्या टोपे की 200 वीं जयंती

(200th birth anniversary of Tatya Tope)

- सरकार ने,1857 के विद्रोह के प्रमुख नेताओं में से एक तात्या टोपे के बलिदान दिवस के अवसर पर उनकी स्मृति में 200 रूपये का एक स्मारक सिक्का और 10 रूपये मूल्य का सिक्का जारी किया है।
- तात्या टोपे इस विद्रोह में झाँसी की रानी एवं नाना साहब के साथ अंग्रेजों के विरुद्ध लड़े। वे ग्वालियर पर कब्जा करने में सफल भी रहे थे किंतु ये विजय अस्थायी रही और अंततोगत्वा जनरल नेपियर ने इन्हें हरा दिया।

VISION IAS

- 1851 में, जब लार्ड डलहौजी ने नाना साहिब को उनके पिता की पेंशन से वंचित कर दिया तों तात्या टोपे भी अंग्रेजों के के कट्टर शत्रु बन गए।
- मई 1857 में, जब राजनीतिक तूफान गति प्राप्त कर रहा था, उन्होंने कानपुर में तैनात ईस्ट इंडिया कंपनी के भारतीय सैनिकों पर जीत हासिल की, नाना साहिब की सत्ता की स्थापित की और उनकी सेना के कमांडर-इन-चीफ बन गए।
- कानपुर पर पुनः अधिकार करने एवं नाना साहेब से अलग होने के बाद उन्होंने झांसी की रानी से जुड़ने के लिए के लिए अपना मुख्यालय कालपी में स्थानांतरित किया एवं बुंदेलखंड में एक विद्रोह को नेतृत्व भी प्रदान किया।
- बुंदेलखंड में हार का सामना करने के बाद, वह ग्वालियर पहुंचे और पेशवा के रूप में नाना साहिब की घोषणा की लेकिन शीघ्र ही अपनी पकड़ खो दी।
- तदुपरांत उन्होंने सागर और नर्मदा क्षेत्रों में तथा खानदेश और राजस्थान में एक सफल छापामार युद्ध आरंभ किया।
- ब्रिटिश सेना एक वर्ष से भी अधिक समय तक उन्हें वश में करने में विफल रही। उनके विश्वसनीय मित्र नरवर के प्रधान मान सिंह के विश्वासघात के कारण ही अंग्रेज़ उन्हें पकड़ने में सफल हो पाए। उन्हें अंग्रेजो द्वारा शिवपुरी ले जाया गया जहाँ उन पर मुकदमा चला कर मृत्युदंड दे दिया गया।

I.6. कौशाम्बी में पुरातात्विक स्थल

(Archaeological Site In Kaushambi)

- कौशाम्बी बुद्ध के समय राजा उदयन द्वारा शासित 'वत्स जनपद' की राजधानी थी। यहाँ एक प्राचीन किले का अवशेष अपने प्राचीन अतीत का प्रमाण प्रस्तुत करता हैं।
- कौशाम्बी, उत्तर प्रदेश में, निम्न स्मारकों को अरक्षित घोषित किया गया है और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा इनका संरक्षण किया जा रहा है
- कर्रा तहसील- सिराथू, कौशाम्बी जिले में अवस्थित जय चन्द्र से सम्बद्ध किला
- कौशाम्बी जिले की मंझमपुर तहसील के कोसम में स्थित प्राचीन किला ।
- कौशाम्बी जिले की पभोसा पहाड़ी के मंदिर में स्थित कृत्रिम गुफा।
- कौशाम्बी जिले की मंझमपुर तहसील की पभोसा पहाड़ी के शिखर पर ईंटों से बनी विशाल इमारत के अवशेष

I.7.भारत लाओस सांस्कृतिक संबंध

(India-Laos Cultural Linkages)

- भारत और लाओस के बीच सांस्कृतिक संबंधों की प्रष्टभूमि में भारतीय रीति रिवाजों, परम्पराओ तथा धार्मिक विश्वासों और मान्यताओं को अपने में समेटे हुए सिंघली बौद्धधर्म की लाओस में स्थापना हुई।
- रामायण और महाभारत तथा पाली, प्राकृत और संस्कृत में सृजित कई साहित्यिक कृतियाँ साझी विरासत का हिस्सा बन गई।

VISION IAS

- बौद्ध धर्म और हिंदू धर्म के साथ ही जैन धर्म भी उसी गति से प्रचलित हुआ। यद्यपि विद्वानों ने भारत-लाओस सांस्कृतिक संबंधों को जैन धर्म के दृष्टिकोण से अध्ययन नहीं किया है।
- चूंकि व्यापार भारतीय संस्कृति के प्रसार के लिए सबसे महत्वपूर्ण कारक था अतः व्यापारी समुदाय, जो ज्यादातर जैन थे के द्वारा अवश्य जैन धर्म की मान्यताओं और तीर्थंकरों की पूजा को बढ़ावा दिया गया होगा दृष्टव्य है की बौध और जैन कला और स्थापत्य में कोई विशेष अंतर सामन्यतः नहीं किया जा सकता।

I.8. अमूर्त सांस्कृतिक विरासत और भारत की विविध सांस्कृतिक परंपराओं की रक्षा

(Safeguarding the Intangible Cultural Heritage and Diverse Cultural Traditions of India)

- संस्कृति मंत्रालय के "अमूर्त विरासत और भारत के विविध सांस्कृतिक परंपराओं की सुरक्षा के लिए " शीर्षक से एक योजना तैयार की गयी है, जिसके माध्यम से विभिन्न संस्थाओ को पुनर्जीवित तथा समूहों और व्यक्तियों को उर्जायुक्त बनाया जायेगा ताकि ये भारत की अमूर्त समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को सशक्त बनाने उनकी रक्षा करने और संरक्षण जैसी गतिविधियों / परियोजनाओं में शामिल होने के माध्यम से अपना योगदान दे सके ।

सांस्कृतिक विरासत शहर का दर्जा प्राप्त होने के लाभ
• यूनेस्को वर्ल्ड हेरिटेज सिटी का टैग किसी शहर को प्राप्त होने से इसकी पर्यटन ब्रांडिंग को जबरदस्त फायदा पहुचता है। रोम, पेरिस, कहिरा और एडिनबर्ग जैसे शहर इसके उदाहरण है।   • पर्यटन में इजाफा होने का अर्थ संबद्ध उद्योगों में रोजगार की वृद्धि।   • यूनेस्को की वेबसाइट के अनुसार राष्ट्र वर्ल्ड हेरिटेज समिति से अपनी सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण हेतु सहयोग और विशेषज्ञ सलाह प्राप्त कर सकते हैं।

- योजना सामाजिक जीवन में मान्यता प्राप्त सभी अमूर्त सांस्कृतिक विरासत यथा भाषा के साथ ही मौखिक परंपरा और अभिव्यक्ति, प्रदर्शन कला, सामाजिक प्रथाओं, अनुष्ठान और उत्सव, प्रकृति और ब्रह्मांड से संबंधित ज्ञान और प्रथाएं तथा पारंपरिक शिल्प को कवर करेगी।

I.9. विरासत टैग

(Heritage Tag)

- वर्ष 2012 में, संस्कृति मंत्रालय ने यूनेस्को के समक्ष दिल्ली के लिए सांस्कृतिक विरासत शहर का टैग प्राप्त करने का नामांकन दाखिल किया था, जिसे बाद में वापस ले लिया गया था।
- इसका कारण यह था की एक बार शहर के विरासत सूची में शामिल हो जाने के पश्चात शहर में निर्माण तथा भूमि उपयोग के प्रारूप में कोई भी परिवर्तन करना मुश्किल हो जाएगा।
- भारत यूनेस्को की करीब 1,000 विश्व विरासत स्थलों में से 32 विरासत स्थलों की भूमि है जिनमें से तीन लाल किला, कुतुब मीनार और हुमायूं का मकबरा दिल्ली में है।

VISION IAS

- लेकिन, दुनिया के प्रमुख 220 विश्व विरासत शहरों में से कोई भी भारत में नहीं है।
- भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग (एएसआई) किसी भी भारतीय साइट चाहे वह सांस्कृतिक हो या प्राकृतिक को विश्व विरासत का दर्जा प्रदान करने के लिए कि अनुरोध अग्रेषित करने के लिए नोडल एजेंसी है । इसके द्वारा किया गया अनुरोध केंद्र या राज्य सरकार की एजेंसियों के साथ ही प्रबंधन न्यास आदि से से प्राप्त प्रस्तावों पर आधारित होता है।पर्याप्त छानबीन के पश्चात सरकार संबंधित दस्तावेजों को विश्व विरासत केंद्र के पास नामांकन के लिए भेजती है।
- एक विश्व विरासत स्थल (इमारत, शहर, संकुल, रेगिस्तान, जंगल, द्वीप, झील, स्मारक, या पहाड़ हो सकता है) है जिसे संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) द्वारा विशेष सांस्कृतिक या भौतिक महत्व के स्थल के रूप सूचीबद्ध किया जाता है। सूची यूनेस्को की विश्व विरासत समिति द्वारा प्रशासित अंतरराष्ट्रीय विश्व विरासत कार्यक्रम के अंतर्गत तैयार की जाती है। यूनेस्को की विश्व विरासत समिति यूनेस्को के 21 सदस्य देशों से मिलकर बनती है, जिनका चुनाव के महासभा द्वारा किया जाता है।

I.10. साहित्य अकादमी

(Sahitya Academy)

- यह भारत में साहित्यिक कृतियों से संबंधित राष्ट्रीय अकादमी है जो साहित्य को बढ़ावा देने के लिए समर्पित है। हालांकि इसे सरकार द्वारा स्थापित किया गया है किन्तु यह एक स्वायत्त संगठन के रूप में कार्य करती है।
- भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में प्रगणित 22 भाषाओं के अलावा अंग्रेजी और राजस्थानी भाषाओं में सृजित साहित्य के संबंध में भी अकादमी के द्वारा संचालित कार्यक्रम लागू किया जा सकता है।
- साहित्य अकादमी ,साहित्य सृजन के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार प्रदान करती है।

I.11. यूनेस्को के द्वारा संचालित क्रिएटिव सिटी नेटवर्क

(Unesco's Creative City Network)

- वर्ष 2004 में शुरू किये गए वर्तमान में 116 सदस्य शहरों को मिलाकर बने यूनेस्को के क्रिएटिव सिटी नेटवर्क के संचालन का उद्देश्य टिकाऊ शहरी विकास, सामाजिक समावेशन और सांस्कृतिक जीवंतता के लिए उत्प्रेरक के रूप में आवश्यक रचनात्मकता का विकास करने के साथ ही इससे संबंधी निवेश करने के लिए प्रतिबद्ध शहरों के बीच अंतरराष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देना हैं।
- टिकाऊ शहरी विकास के लिए वर्ष 2015 में स्वीकार किये गए एजेंडा 2030 में संस्कृति और रचनात्मकता पर सतत विकास के दो मुख्य आधारों के रूप में प्रकाश डाला गया है।
- यूनेस्को क्रिएटिव शहर नेटवर्क में शहरों को सात रचनात्मक क्षेत्रों के आधार पर संबद्ध करता है जिसमें शिल्प और लोक कला, डिजाइन, फिल्म, पाक कलाएं, साहित्य, मीडिया कला और संगीत सम्मिलित हैं।
- जयपुर और वाराणसी हाल ही क्रमशः हस्तशिल्प एवं लोक कला तथा संगीत के शहरों के रूप में क्रिएटिव सिटी नेटवर्क से जोड़े गए हैं ।

VISION IAS

I.12. साहित्य के लिए 2015 का नोबेल पुरस्कार

(Nobel Prize in Literature 2015)

- साहित्य में नोबेल पुरस्कार 2015 से बेलारूसी लेखक स्वेतलाना एलेक्सेविक (Svetlana Alexievic) को उनके पॉलीफोनिक लेखन; अ मोन्यूमेंट टू सफरिंग एंड करेज इन अवर टाइम के लिए प्रदान किया गया।
- सुश्री एलेक्सेविक साहित्य के लिए नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने वाली 14 वी महिला हैं।
- स्वेतलाना एलेक्सियाविच को यह पुरस्कार महिलाओं के संघर्ष और साहस पर उनके लेखन के लिए दिया गया है.
- एक पत्रकार लेखक सुश्री एलेक्सेविक के द्वारा अपने पत्रकारिता कौशल का इस्तेमाल सोवियत संघ और उसके पतन से संबंधित महान त्रासदियों के कालक्रमानुसार उल्लेख के लिए किया गया।
- चेरनोबिल परमाणु संयंत्र में हुए हादसे पर "वॉयसेस ऑफ चेरनोबिल" किताब लिखी. सोवियत संघ के विघटन के बाद सोवियत कालीन पीढ़ियों ने खुद को नई दुनिया में कैसे ढाला, इस पर भी उन्होंने "सेकेंड हैंड टाइम" नाम की किताब लिखी
- पिछले साल के साहित्य पुरस्कार फ्रांसीसी लेखक पैट्रिक मोदिआनो को प्रदान किया गया था।

I.13. विश्व विरासत स्थलों को अपनाने के लिए निर्धारित नीति

(Policy to Adopt World Heritage Sites)

- यूनेस्को अपनी 21 सदस्यीय विश्व विरासत समिति और इंटरनेशनल कौंसिल ऑन मोन्यूमेंट एंड साइट्स (ICOMOS) तथा इंटरनेशनल यूनियन फॉर कनजर्वेसन ऑफ़ नेचर (IUCN) जैसे सलाहकार निकायों की मदद से, निर्धारित परिचालन दिशानिर्देशों के प्रारूप के अनुसार सांस्कृतिक और प्राकृतिक स्थलों को विश्व विरासत सूची में शामिल करने का निर्णय करता है ।
- इस तरह के सांस्कृतिक और प्राकृतिक स्थलों को आउट स्टैंडिंग युनिवर्सल वैल्यू (OUV) प्रदर्शित करना चाहिए साथ ही आवश्यक, 10 निर्धारित मापदंडो में से एक या अधिक पर खरा उतरना चाहिए। इन्हें प्रामाणिक और अखंड तथा संरक्षण योग्य अच्छी स्थिति में होना चाहिए।
- भारत से 32 स्थलों को विश्व विरासत स्थलों के रूप में घोषित किया गया है इनमें से 25 सांस्कृतिक स्थल है जबकि 7 प्राकृतिक स्थल।
- पश्चिमी घाट , काजीरंगा वन्यजीव अभयारण्य और हुमायूं का मकबरा, विश्व विरासत स्थलों के रूप में मान्यता प्राप्त हैं हालांकि नालंदा और स्वर्ण मंदिर अभी भी यूनेस्को के द्वारा मान्यता दिए जाने वाले संभावित स्थलों की सूची में शामिल हैं
- यूनेस्को के परिचालन दिशानिर्देश के अनुसार OUV मूल्यांकन के लिए मानदंड हैं;
  - ✓ मानव की रचनात्मक प्रतिभा का प्रतिनिधित्व करने वाली एक उत्कृष्ट कृति ;
  - ✓ मानवीय मूल्यों के महत्वपूर्ण आदान प्रदान का प्रदर्शन करने के लिए ,
  - ✓ एक सांस्कृतिक परंपरा या एक सभ्यता का विशिष्ट रूप से प्रतिनिधित्व करने के लिए
  - ✓ इमारत वास्तु या तकनीकी का एक प्रकार का उत्कृष्ट उदाहरण हो ,

- ✓ एक पारंपरिक मानव बस्ती, भूमि उपयोग, या समुद्र के उपयोग का एक विशिष्ट उदाहरण हो जो एक संस्कृति का प्रतिनिधि करता हो (या संस्कृतियों)अथवा मानवीय आदान प्रदान को अभिव्यक्त करता हो
- ✓ प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से घटनाओं या रहने वाले जीवित परंपराओं, विचारों मान्यताओं के साथ सार्वभौमिक महत्व के कलात्मक और साहित्यिक कृतियों के साथ संबद्ध हो।
- ✓ अतिप्राकृतिक घटना को समाहित किये हुए हो या असाधारण प्राकृतिक सौंदर्य तथा सौदर्ययुक्त परिदृश्य के लिए प्रसिद्द हो
- ✓ पृथ्वी के इतिहास की प्रमुख चरणों का प्रतिनिधित्व करने वाले स्थलों का उत्कृष्ट उदाहरण हो
- ✓ पृथ्वी पर जारी पारिस्थितिकी और जैविक प्रक्रियाओं महत्वपूर्ण उदाहरण हो।
- ✓ जैविक विविधता के संरक्षण के इन-सीटू प्रयासों के लिए सबसे महत्वपूर्ण प्राकृतिक निवासों को समाहित किये हुए हो।

VISION IAS

Copyright © by Vision IAS

All rights are reserved. No part of this document may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior permission of Vision IAS.

VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION
CSE 2013
CSE 2014
GAURAV AGRAWAL
AIR-1
NIDHI GUPTA
AIR-3
VANDANA RAO
AIR-4
SUHARSHA BHAGAT
AIR-5
AIR-1
TINA DABI
AIR-4
ARTIKA SHUKLA
AIR-6
ASHISH TIWARI
AIR-5
SHASHANK TRIPATHI
AIR-9
KARN SATYARTHI
Interview Guidance Prog
All India PRELIMS MAINS Test Series
Foundation Course
PT 365: 1 year Current Affairs Prog